सत्य सङ्गीत

—०—

लेखक—

दरबारीलाल सत्यभक्त

संस्थापक सत्यसमाज

प्रकाशक

सत्याश्रम वर्धा [सी. पी.]

नवम्बर १९३८ ई

मार्गशीर्ष १९९५ त्रि

मूल्य दस आने

प्रकाशक—
सूरजचन्द सत्यप्रेमी
सत्याश्रम वर्धा (सी पी)



मुद्रक—
मनजर—
सत्येश्वर प्रिंटिंग प्रेस
वर्धा (सी पी)

-: अनुक्रमणिका :-



भगवान सत्य　　　　भगवती अहिंसा



[illegible]

समर्पण

भगवान सत्य भगवती अहिंसा के चरणोंमें

हे जगत्पिता हे जगदम्बे,

तुमने चरणो मे लिया मुझे ।
मै था अनाथ अतिदीन हीन तुमने सनाथ कर दिया मुझे ॥
तार्किकता मे सहृदयता का सम्मिलन किया उद्धार किया ।
निष्प्राण बना था यह जीवन तुमने प्राणो का सार दिया ॥
सब मिला जब कि समभाव मिला सद्बुद्धि मिली ससार मिला ।
सारे धर्मों के पुण्यपुरुष मिल गये जगत का प्यार मिला ॥
मिलगई प्रलोभन जय मुझको विपदा सहने की शक्ति मिली ।
रह गया मुझे क्या मिलने को जब आज तुम्हारी भक्ति मिली ॥
मेरा सर्वस्व तुम्हारा है बोलो फिर तुम्हें चढाऊ क्या ।
अक्षर अक्षर का ज्ञान तुम्हीं ने दिया भक्ति बतलाऊँ क्या ॥
पर भक्ति नहीं मेरे वश मे वह गुण-सगीत सुनाती है ।
गगाजल अँजुली मे लेकर गगा को भेंट चढाती है ॥

तुम्हारा भक्त—

दरबारी.

प्रस्तावना

जब से मैंने सत्यसमाज की स्थापना की तभी से मुझे इस बात का अनुभव हो रहा है कि इस प्रकार के गीत या कविताएँ तैयार की जाँय जिनमें सर्व-धर्म-समभाव और सर्व-जाति-समभाव तथा विवेक आदि के भाव भरे हों। पिछले चार वर्षों से मैं ऐसे गीत तैयार कर रहा हूं। सत्यसंगीत उनका संग्रह है। साथ ही इसमें कुछ कविताएँ और आगई हैं जो कि समय समय पर मेरे हृदय के बाहर निकले हुए उद्गार हैं। ये सब गीत दूसरों के लिये कितने उपयोगी होंगे यह मैं नहीं कह सकता परन्तु इनसे मुझे बहुत शान्ति मिली है और मिलती है। बहुत से मित्र खासकर सत्यसमाजी बन्धु भी इन कविताओं का नित्य उपयोग करते हैं। अधिकांश कविताएँ प्रार्थनारूप हैं जिसमें भ. सत्य भ. अहिंसा तथा महात्मा पुरुषों का गुणगान है। ये प्रार्थनाएँ आस्तिकों के लिये भी उपयोगी हैं और नास्तिकों के लिये भी उपयोगी हैं। सत्य और अहिंसा को भगवान भगवती या जगत्पिता और जगदम्बा मानलेने से एक तरह की सनाथता का अनुभव होता है, संकट में धैर्य रहता है और जीवन के सामने एक आदर्श रहता है इसलिये जगत्कर्तृत्ववाद को न मानने पर भी इनकी उपासना हो सकती है और ईश्वर मानने के लाभ मिल सकते हैं। और आस्तिक को तो इन प्रार्थनाओं में आपत्ति ही क्या है?

यहां सत्य और अहिंसा की सगुणोपासना की गई है। सत्य और अहिंसा एक धार्मिक सिद्धान्त है और सब धर्मों के मूल हैं पर इतना कह देने से हमारे दिल की प्यास नहीं बुझती। दिल की

प्यास बुझाने के लिये और सर्व-धर्मोंका मर्म समझने के लिये उन्हे जगत्पिता और जगन्माता के रूप में देखने की जरूरत है। तभी हम दुनिया के समस्त तीर्थंकर पैगम्बर या अवतारो मे भ्रातृत्व दिखला सकते है। ईश्वरदूत ईश्वरपुत्र आदि शब्दो का मर्म समझ सकते है।

हम मनुष्य सत्य और अहिंसा को मनुष्याकार मे जितना समझ सकते है उतना अन्य किसी आकार मे नही। किस भावका शरीर पर क्या प्रभाव पडता है यह बात जितनी हम मनुष्य-शरीर मे स्पष्ट देख सकते है उतनी दूसरे शरीरो या आकृतियो मे नही। हम अपने माता पिता की कल्पना जैसी मनुष्य शरीर मे कर सकते है वैसी अन्य शरीर मे नही। जैसे अमूर्त ज्ञान को मूर्त्त अक्षरो द्वारा समझना पडता है उसी प्रकार अमूर्त्त सत्य अहिंसा को मूर्त्त रूपमे समझने की कोशिश की गई है।

राम, कृष्ण, महावीर आदि महात्मा पुरुषो का गुणगान उन्हे ईश्वर मानकर नही किया गया है किन्तु व्यापक दृष्टि से जगत की सेवा करनेवाले असाधारण महापुरुष के रूपमे किया गया है। उनके त्याग तप जगत्सेवा आदि पर ही जोर दिया गया है और उनके जीवन के साथ जो अवैज्ञानिक-अविश्वसनीय-घटनाएँ चिपका दी गई है वे अलग कर दी गई है। जो गुण उनके जीवन से सीखे जा सकते है उन्ही का वर्णन किया गया है। साथ ही समभाव का इतना ध्यान रक्खा गया है कि एक की स्तुति दूसरे की निंदा करने वाली न हो। ऐसी प्रार्थनाएँ आस्तिक और नास्तिक दोनो के लिये हितकारी है।

बहुत से लोग प्रार्थनाओ के महत्त्व को ठीक ठीक नही समझते। कुछ लोग तो सारी सिद्धियॉ उसी मे देखते है और कुछ

उसे बिलकुल निरर्थक और ढोंग समझते है। ये दोनो ही अतिवाद हैं। प्रार्थनाओं से हमारे हृदय पर ही प्रभाव पडता है बस इतना ही लाभ है और यह कम लाभ नही है। प्रार्थना से हमारा हृदय शान्त हो जाता है थोडी देर को दुनिया के दु ख भूल जाता है सनाथता का अनुभव होता है जिनकी प्रार्थना की जाय उनके जीवन का प्रभाव अपने पर पडता है दृढता आती है कर्मठता जाग्रत होती है इसी प्रकार के लाभ मिलते है। इसमे अर्थ नहीं मिलता अथवा अर्थप्राप्ति प्रार्थना का लक्ष्य नहीं है पर धर्म काम और मोक्ष तीनों पुरुषार्थ प्रार्थना के लक्ष्य है। सदाचार तथा कर्तव्य की शिक्षा धर्म है। गीत का आनन्द काम है दुनिया के दु ख भूल जाना मोक्ष है इस प्रकार यह तीनो पुरुषार्थो के लिये उपयोगी है।

नियमित और सम्मिलित प्रार्थना का उपयोग इसमे भी अधिक है। किसी धर्मालय मे ऐसी प्रार्थनाएँ की जॉय तो मिलकर प्रार्थना करनेवालो मे एक तरह की निकटता आयेगी परिचय बढेगा एक दूसरे की परिस्थिति का ज्ञान होगा इसलिये सहयोग मिल सकेगा किसी एक लक्ष्य मे काम करनेवालो का सगठन होगा।

पर प्रार्थनाएॅ समभावी होना चाहिये और ऐसी भाषा मे होना चाहिये जिसे हम समझ सके बहुत से लोग आज भी सस्कृत प्राकृत के विद्वान न होने पर भी उसी भाषा मे प्रार्थनाएॅ पढा करते है। यह प्राचीनता की बीमारी है जो कि प्रार्थना को निष्फल बना देती है इसीलिये सत्यसगीत हिन्दी मे लिखा गया है। पाठको के लिये यह सग्रह कितना उपयोगी होगा कह नही सकता पर मेरे लिये तो उसका नित्य उपयोग होता है।

१७-१०-१९३८ —दरबारीलाल सत्यभक्त



* दरबारीलाल सत्यभक्त *

॥ जय सत्य ॥

सत्य-संगीत

सत्येश्वर

मेरे जीवनमे रस धार--
बहाकर करदो बेडा पार ॥

[१]

मेरे मन-मन्दिरमे आओ ।
आकर करुणा-कण बरसाओ ।
रोम रोमम प्रेम बहाओ ।
प्राणेश्वर करदो जीवनमें प्राणोका मचार ।
मेरे जीवनमे रसधार, बहाकर करदो बेडापार ॥

[२]

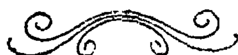
सत्येश्वर तुम त्रिभुवनगामी ।
सकल-चराचर-अन्तर्यामी ।
सबहा धनपर्योंके स्वामी ।
निराकार हो पर भक्तोंके मन हो अखिलाकार ।
मेरे जीवनमे रसधार, बहाकर करदो बेडापार ॥

[३]

मात अहिंसाके सहचर तुम ।
लोकोंके ब्रह्मा हरि हर तुम ।
विश्वरगके हो नटवर तुम ।
जन्ममरण जीवनमय हो तुम गुणगणलीलागार ।
मेरे जीवनमे रसधार, बहाकर करदो बेडा पार ॥

[४]

वेदकुरानाधार तुम्ही हो ।
सूत्र पिटकके सार तुम्ही हो ।
ईसाकी मुखधार तुम्ही हो ।
रोम रोममे कोटि कोटि है तीर्थंकर अवतार ।
मेरे जीवनमे रसधार, बहाकर करदो बेडापार ॥



कौन

कौन तू ? तेरा कौन निशान ।
किमाकार, क्या सीमा तेरी, क्या तेरा सामान ॥
कौन तू तेरा कौन निशान ।

अगम अगोचर महिमा तेरी कौन सके पहिचान ।
कणकणमें डूबे तीर्थंकर ऋषि मुनि महिमावान ॥
कौन तू तेरा कौन निशान ॥

तेरा कण पाकर बनते हैं जन सर्वज्ञ महान ।
पर क्या हो सकता है तेरी सीमाओं का ज्ञान ॥
कौन तू तेरा कौन निशान ॥

नित्य निरन्तर सूक्ष्म-प्रवाही तेरा अद्भुत गान ।
होता रहता पर सुन पाते हैं किस किसके कान ॥
कौन तू तेरा कौन निशान ।

दुनिया रोती मैं भी रोता जब बनकर नादान ।
कितने हैं वे देख सके जो तब तेरी मुसकान ॥
कौन तू तेरा कौन निशान ॥

तू है वही चूर करता जो मेरे सब अभिमान ।
रोते समय आँसुओंकी धाराका करता पान ॥
कौन तू तेरा कौन निशान ॥

इतना ही समझा हूं स्वामी तेरा अकथ पुरान ।
इतने में ही पूर्ण हुए हैं मेरे सब अरमान ॥
कौन तू तेरा कौन निशान ।

तेरा प्यार

मैने चाहा तेरा प्यार
इसीलिये तेरे चरणो को ढूँढ फिरा ससार ॥ मैने ॥
मन्दिर, मसजिद, गिरजा घर मे
वन, उपवनमे, डगर डगर मे
ढूँढ फिरा, पा सका न लेकिन तेरा कहीं निशान ।
त तो था सब जगह, मगर था मुझे न इतना ज्ञान ।
इससे हुआ न तेरा साथ
तेरी पद-रज लगी न हाथ
निज-पर सुख कुछ हाथ न आया, हुई जिन्दगी भार ।
मैने चाहा तेरा प्यार ॥ १ ॥

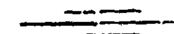
मैने चाहा तेरा प्यार
छोटासा मै जन्तु और यह है अनत ससार ॥ मैने ॥
जगह जगह ढूँढा है तुझको
पर, पथ का था ज्ञान न मुझको
चिल्ला चिल्ला थका सर्वदा बजा बजा कर ढोल
त भी हँसता रहा, न बोला—भीतर जरा टटोल
तो भी रहा मान मे चूर
ढोगी, कुटिल, काल सम क्रूर
तेरा झूठा नाम सुना कर चकित किया ससार ।
मैंने चाहा तेरा प्यार ॥ २ ॥

मैने चाहा तेरा प्यार
छल करनेमे छला गया मै बनकर मूर्ख गमार । मैने ।
समझा था तुझको छलता हूँ
अब समझा मैं ही जलता हूँ
तुझको धोखा देना ही था धोखा खाना आप ।
जब समझा त मन मे बैठा देख रहा सब पाप ॥
मेरा चूर हुआ अभिमान
तेरी देख पडी मुसकान
तेरे चरणो पर बरसाने लगा अश्रु की धार ।
मैने चाहा तेरा प्यार ॥ २ ॥

मैने चाहा तेरा प्यार
तेरा आशीर्वाद मिला तब सूझ पडा ससार ॥ मैने ।
जाति पाँति का मोह छोड कर
ऊँच नीच का भेद तोड कर
आया तेरे पास, दिखाया तूने अपना ठाट
सर्वधर्म सम- भाव, अहिंसा का सिखलाया पाठ
मैने पाया सत्य-समाज
जिसमे था तेरा ही साज
हुआ विश्वमय, विश्वबन्धु मै तेरा खिदमतगार
मैने चाहा तेरा प्यार ।



पट खोल खोल



पट खोल खोल !
मंदिरके तू पट खोल खोल ! !
कबसे मैं यहाँ खडा हूं ।
आशामय बना पडा हूँ ।
तेरे ही लिये अडा हूँ ।
निश्चयका बडा कडा हूँ ।
मुझसे दो बातें बोल बोल ! !
मंदिरके तू पट खोल खोल ! ! ॥ १ ॥

मैं ढूँढ फिरा जग सारा ।
भटका मैं मारा मारा ।
मैं ठगा गया बेचारा ।
तू मिला न मेरा प्यारा ।
मैं हार गया अब डोल डोल ।
मंदिरके तू पट खोल खोल ! ॥ २ ॥

गिरजाघर में तू जाता ।
मसजिदमें भी दिखलाता ।
मंदिरमें भी तू आता ।
पर पता न कोई पाता ।
तू है अलभ्य अनमोल मोल ।
मंदिरके तू पट खोल खोल ! ॥ ३ ॥

शास्त्रोंने जिसको गाया ।
मुनियोंने जिसे मनाया ।
तीर्थंकरने जो पाया ।
थी सब तेरी ही छाया ।
तू है अडोल पर लाल लोल ।
मंदिरके तू पट खोल खोल ॥ ४ ॥
तेरा ही टुकडा पाकर ।
बनते है धर्म--सुधाकर ।
करुणाकर मनमे आकर ।
हममे मनुष्यता लाकर ।
चित् शान्ति सुधारस घोल घोल
मंदिरके तू पट खोल खोल ॥ ५ ॥

सत्य !

पढी पुस्तके बहुत मगर ,
मिल सका न मुझको सम्यग्ज्ञान ।
नाना आसन लगा लगाकर,
ध्यान किया पर लगा न ध्यान ॥
दुनिया भरके मन्त्र जपे,
पर हुई नहीं दुःखो की हानि ।
जपता यदि निःपक्ष हृदयसे,
सत्यदेव, मिलता सुख खानि ॥

जिज्ञासा

[१]

बता दो कौन से पथ मे तुम्हे हम आज पायेंगे ।
कहो कैसे छटा अपनी प्रभो हमको दिखायेंगे ॥

[२]

विपद के मेघ छाये हैं न ऑखो सूझ पडता है ।
कहो किस वक्त आकर आप हमको पथ दिखायेंगे ॥

[३]

गमारू गीत गाते ही निकाली जिदगी सारी ।
तुम्हारी ही कृपासे नाथ कब गुण गान गायेंगे ॥

[४]

बकी है धर्म के मद मे हजारो गालियॉ हमने ।
कहो कब आप समभावी मधुर वीणा बजायेंगे ॥

[५]

लडाई द्वद ही देखे खुदा के नाम पर हमने ।
कहो तो आप अपनी प्रेम मुद्रा कब दिखायेंगे ॥

[६]

तुम्हारे ही लिये आसन बनाया आज है दिल पर ।
कहो आकर हॅसायेंगे न आकर या रुलायेंगे ॥

भगवन्

[१]

विजय हो बन्धुता की प्रेम का जयकार हो भगवन् ।
नहीं हो अब दुखी कोई परस्पर प्यार हो भगवन् ॥

[२]

गरीबी रह नहीं पाये, अमीरी मे न धनमद हो ।
बढ़े सम्पत्ति अब सब की बड़ा व्यापार हो भगवन् ॥

[३]

अविद्या का अँधेरा यह, जगत मे रह नहीं पावे ।
बटे सज्ज्ञान मानव ज्ञानका आगार हो भगवन् ॥

[४]

बने ज्ञानी सभी मानव सदाचारी विनय-धारी ।
न कोरे फेशनेबुल या रँगीले यार हो भगवन् ॥

[५]

जरासी झोपडी भी हो सदा मंदिर सुशिक्षा का ।
दया से पूर्ण सच्ची सभ्यता का द्वार हो भगवन् ॥

[६]

अविद्या मूर्ति महिलाएँ कहीं भी रह नहीं पाये ।
बने ये भारती देवी कि स्वर्गागार हो भगवन् ॥

[७]

अभी सद्धर्म की नौका भँवर मे खा रही चक्कर ।
रखे उत्साह बल ऐसा कि बेडा पार हो भगवन् ॥

सत्यब्रह्म

[१]

तेरी ही सेवा करने को सब तीर्थंकर आते है,
ज्ञानदीप लेकर दुनिया को तेरा पथ दिखलाते है।
तेरी ही करुणा को पाकर 'बोधि' बुद्ध बन जाते है,
स्वार्थ जयी तेरे सेवक ही जग मे जिन कहलाते है॥

[२]

योगेश्वर कहलाते है जो दिखलाते तेरी छाया,
मर्यादा पुरुषोत्तम की भी मूरति है तेरी माया।

तेरी ही एकाध किरण जब कोई जन है पाजाता,
ऋषि महर्षि अवतार महात्मा तीर्थंकर तब कहलाता ॥

[३]

तेरा ही करुणा-लव पाकर है मसीह होता कोई,
तेरा पथ दिखला कर जग के सकल पाप धोता कोई ।
तेरी आज्ञाके थोडे से टुकडे जो ले आता है,
जनसमाजका सच्चा सेवक पैगम्बर कहलाता है ॥

[४]

राम कृष्ण जरथुस्त बुद्ध जिन ईसा और मुहम्मद भी,
कन्फ्यूशियस आदि पैगम्बर तीर्थंकर अवतार सभी ।
तेरी करुणाके भूखे थे, थे समस्त तेरे चाकर,
अखिल जगत चलता है, तेरी ही करुणामे करुणाकर ॥

[५]

श्रद्धाका अवलम्ब, ज्ञानका मर्म, वृत्तका जीवन तू,
जनसमाज का मेरु दंड तू, धर्म कोषगृह का धन तू ।
तेरी ही सेवा करने मे सकल धर्म आ जाते है,
तेरी करुणा से भिक्षुक भी सारे सुख पा जाते है ॥

[६]

पक्षपात का नाम न रहता जहाँ पडे तेरी छाया,
अंधकार मे गिरता है वह जिसने तुझे न अपनाया ।
सब धर्मोंका सार जगत्का प्राण सब सुखो का आकर,
सबके मनमे कर निवास कर विश्व शान्ति हे करुणाकर ॥

नाथ

नाथ कब तक तरसाओगे ।

[१]

मनुज रूप धर भले न आओ ।
अवतारी न छटा दिखलाओ ।
पर छोटी सी किरण क्या न मन मे पहुचाओगे ॥ नाथ ॥

[२]

कठिन आपदाएँ आवेगी ।
पर टकराकर मर जावेंगी ।
अगर आप निज वरद हस्त हम पर फैलाओगे ॥ नाथ ॥

[३]

पक्षपात का भूत भगेगा।
स्वार्थभाव का विष उतरेगा।
श्वास-पवन से यदि थोडे भी कण पहुँचाओगे ॥ नाथ ॥

[४]

ऑसू बन कर मैल बहेगा।
प्रेम पथ प्रत्यक्ष रहेगा।
मेरी इन ऑखो मे पदरज अगर लगाओगे ॥ नाथ ॥

[५]

तृष्णा अपना अन्त करेगी।
युग युग की यह प्यास बुझेगी।
अगर जमि पर थोडे से सीकर बरसाओगे ॥ नाथ ॥

[६]

यदि थोडा भी दान न दोगे।
तो आकर भी क्या कर लोगे।
सुधा गरल होगी मनका यदि विष न बहाओगे ॥ नाथ ॥

[७]

करुणा का कण-दान दीजिये।
इस अपूत को पूत कीजिये।
तब छोटे से पावन मनका आसन पाओगे ॥ नाथ ॥

भगवान सत्य ।

[१]

तू जगत्-पिता वात्सल्य प्रेम रत्नाकर ।
देवाधिदेव सुख स्वतन्त्रता का आकर ॥
हैं राम, कृष्ण, जिन, बुद्ध, मुहम्मद सारे,
जरथुस्त, यीशु सब तेरे पुत्र दुलारे ॥

[२]

है देशकाल का भेद, मगर हैं भाई
आकर सबने तेरी ही महिमा गाई
सब ही लाये तेरी पदरज का अञ्जन
जिससे विवेक का भान हुआ, दुखभञ्जन ॥

[३]

छाती है जगमे जब कि घोर अँधियारी
अन्यायो से भर जाती पृथिवी सारी ।
बनता है कोई पुत्र दुलारा तेरा
वह विश्व मात्र का सेवक प्यारा तेरा ॥

[४]

होता है उसका उदय जगत् मे रविसम।
मिट जाता जगका अन्धकार रजोगम ॥
अत्याचारो का नाम न रहने पाता।
सर्वत्र शान्ति साम्राज्य अनोखा छाता ॥

[५]

अब फिर भूला है जगत् तात तेरी छवि।
हो गया सतमस-लीन विश्व ज्यो गत रवि ॥
गिर पडा विपत् का और प्रलोभन का पवि
सब बुद्धि शून्य हो रहे महापडित कवि ॥

[६]

अत्याचारो की निकल गई है शका,
ताण्डव दिखलाकर बजा रहे है डका।
हिंसा की चडी मूर्त्ति नाच करती है,
भगवती अहिंसा का प्रभाव हरती है ॥

[७]

ले चुकी अहिंसा का आसन कायरता
बदमाशी कहला चुकी नीति तत्परता ॥
क्रूरत्व आज वीरत्व वेष लेता है।
हर कर सारे कल्याण दुःख देता है ॥

[८]

बलवान सब जगह सुविधाएँ पाते है।

निर्बल बेचारे धुतकारे जाते है ॥
अबलाओ को है लोग पीसते ऐसे
चक्की के दोनो पाट अन्न को जैसे ॥

[९]

बलवान स्वार्थ को धर्म धर्म कहता है।
निर्बल मोनी बन सारे दुख सहता है ॥
ममताभावो की हँसी उडायी जाती।
है न्यायशीलता पद पद ठोकर खाती ॥

[१०]

तेरे पुत्रो ने था जो मार्ग दिखाया।
उस पर लोगो ने ऐसा जाल बिछाया।
सब भूले तुझको बना दलो का दलदल।
उसमे फँसते है मरते है खोकर बल ॥

[११]

अब है उदारता का न नाम भी बाकी।
गाली खाती फिरती है आज वराकी ॥
हर जगह सकुचितता है राज्य जमाती।
जनता तेरा पथ छोड भागती जाती ॥

[१२]

ढोगो ने धर्मासन भी छीन लिया है।
धार्मिकता का भी चोला बदल दिया है ॥
मूसल से भारी पाप न पूछे जाते।
निष्पाप क्रिया पर सब ही ऑख उठाते ॥

[१३]

है सभी रूढ़ियाँ तेरे मार्ग कहाती।
पर तेरी ही आज्ञाएँ ठोकर खाती ॥
बन रहे धर्मगृह द्वेष-दम्भ-क्रीडास्थल।
है ताण्डव दिखला रहा सब जगह छल बल ॥

[१४]

जो धर्म सकल जग को पवित्र करता है।
वह आज जगत की छाया से मरता है ॥
तर गये भील चाण्डाल जिसे पाने से।
वह आज नष्ट होता उनके आने से ॥

[१५]

अब यह असत्य साम्राज्य न देखा जावे।
जगको अब तेरा कोई भक्त बचावे ॥
अथवा मै भी पा सकूँ चरण-रज तेरी ॥
तेरी पूजा मे लगे शक्ति सब मेरी ॥

[१६]

करदू पापो का नाश न कण भी छोड़ूँ।
सदसद्विवेक से सबके बधन तोड़ूँ ॥
मिट्टी मे यह तन मिले नाम भी जावे।
पर तेरी पूजा मे न कमी रह पावे ॥

[१७]

पशु अबला निर्बल शूद्र नही पिस पावे।

प्राणी प्राणी सब बन्धु बन्धु बन जावे ।
हो स्वार्थ-त्यागका भाव सभीके मनमे ।
सर्वत्र दया सत्प्रेम रहे जीवन मे ॥

[१८]

अनुचित बन्धन तो एक भी न रह पावे ।
सर्वत्र हिताहित-बुद्धि मार्ग दिखलावे ॥
अपने अपने अधिकार रख सके सब ही ।
होगा मुझको सतोष नाथ ! बस तब ही ।

[१९]

स्वामित्व न हो पशुबल-धनबल का सहचर ।
दानवता का अधिकार न मानवता पर ॥
सच्चा सेवक ही बने जगत-अधिकारी
स्वामित्व और सेवा होवे सहचारी ॥

[२०]

रह सके न कुछ भी वैर हृदय के भीतर ।
बहजाय नयन के द्वार अश्रु बन बन कर ॥
हो सदा ' अहिंसा परमो धर्म ' की जय ।
अन्याय रूढियो अत्याचारो का क्षय ॥

[२१]

सब धर्मो मे समभाव देव हो मेरा ।
नि पक्ष हृदय मे नाम मत्र हो तेरा ॥
मै देख देख कर चलू चरण रज तेरी ।
बस एक कामना यही प्रभो है मेरी ॥

सत्य-शरण

(१)

निशि दिन सत्य–शरण सुखदाई ।
सर्वधर्मसमभाव प्रेम की पूजा है चतुराई ॥
निशि दिन सत्य–शरण सुखदाई ।

(२)

राम, कृष्ण, जिन वीर, बुद्ध पर जिसकी आज्ञा आई ।
यीशु, मुहम्मद पैगम्बर ने, जिसकी महिमा गाई ॥
निशि दिन सत्य–शरण सुखदाई ।

(३)

किसकी निन्दा किसकी पूजा सब ही भाई भाई ।
भक्त सभी भगवान सत्य के सब ने राह बताई ॥
निशि दिन सत्य–शरण सुखदाई ।

(४)

रख न अन्धश्रद्धा अब मनमें वह विपदाकी खाई ।
पक्षपात अभिमान छोडकर सत्य-भक्त बन भाई ॥
निशि दिन सत्य–शरण सुखदाई ।

भगवती अहिंसा

अपनी झाँकी दिखला जा,
निर्दय स्वार्थ-पूर्ण हृदयो मे शाति सुधा बरसाजा ॥ अपनी ॥

(१)

तेरा वेष बनाकर आती,
तुझको ही बदनाम कराती,
आकर के इस कायरता का भडा-फोड कराजा ॥ अपनी ॥

[२]

वीर-पूज्य वीरो की माता,
तेरी कृपा वीर ही पाता,
अकर्मण्य आलसी जनो को, यह सदेश सुनाजा ॥ अपनी ॥

(३)

अस्त्र शस्त्र के सचालन मे,
आततायियो के ताडन मे,
तेरी गुप्त मूर्ति रहती है, बस आवरण हटाजा ॥ अपनी ॥

(४)

प्राणहीन पूजा या तप मे,
दभ-पूर्ण माला के जप मे,
घोर स्वार्थ है आ कर बैठा, तू चकचूर कराजा ॥ अपनी ॥

(५)

सज्जनता के रक्षण मे तू,
दुर्जनता के तक्षण मे तू,
विविधरूपधारिणी अम्बिके, यह विवेक सिखलाजा ॥ अपनी ॥

(६)

जब महिलाओंके सतीत्व पर,
टूट पड़ेंगे पाप निशाचर,
राम कृष्ण बन कर आवेगी, यह संदेश सुनाजा ॥ अपनी. ॥

(७)

निर्दय क्रियाकांड में पड़कर,
होंगे जब कर्तव्य—शून्य नर,
वीर—बुद्ध बनकर आवेगी, यह भविष्य बतलाजा ॥ अपनी ॥

(८)

कोमलता का रूप दिखाने,
जन सेवा का पाठ सिखाने,
ईसा के मुख से बोलेगी, यह रहस्य समझाजा ॥ अपनी ॥

(९)

मनुष्यता का पाठ पढ़ाने,
बिछुड़ो को संगठित बनाने,
बन आवेगी देवि मुहम्मद, जगको ज्ञान कराजा ॥ अपनी ॥

(१०)

अन्य-विविध-अवतार-धारिणी,
स्वच्छ—हृदय—नभतल—विहारिणी,
तेरे पुत्रो को पहिचानूं, ऐसा मन्त्र बताजा ॥ अपनी ॥



देवी अहिंसा

[१]

देवि अहिंसे, करदे जगके दुःखों का निर्वाण ।
'त्राहि त्राहि' करनेवालोंका करुणा कर कर त्राण ॥
तू है परम धर्म कहलाती सकल सुखोंकी खानि ।
तेरे दृष्टि-तेजसे होती निखिल-दुःख-तम-हानि ॥

[२]

राम कृष्णका कर्मयोग तू जैनोंका तपध्यान ।
बौद्धोंकी करुणा है तू ही तनमें प्राण समान ॥
तू ही सेवाधर्म यीशु का है तेरा इसलाम ।
तीर्थंकर पैगम्बर पैदा करना तेरा काम ॥

[३]

तेरे ही पदरज अञ्जनसे ज्ञान नयनकी भ्रान्ति ।
मिट जाती है सकल जगत को मिलती सच्ची शान्ति ॥
तेरे करतल की छाया से हटते सारे ताप ।
तेरा दुग्धपान करने से बढ़ता पुण्य कलाप ॥

[४]

तेराही अञ्चल बनता है अटल वज्रमय कोट।
टकराकर निष्फल जाती है विपदाओंकी चोट॥
तेरे अचलकी छायामे है सब जग का त्राण।
शान्तिलाभ है वहीं वहीं है जीवन का कल्याण॥

[५]

तीर्थंकर पैगम्बर देवी देव दिव्य अवतार।
नर से नारायण बनते है हर कर भू का भार।
है सब तेरे पुत्र सभी का करती तू निर्माण।
महादेवि, सारे जगका तू करती दुखसे त्राण॥

[६]

सत्य अचौर्य ब्रह्म अपरिग्रह सब तेरी मुसकान।
तेरी प्राप्ति दूर करती है मोह और अभिमान॥
क्षमा शौच शम त्याग आदि सब है तेरे ही अग।
तबतक क्रिया न धर्म न जबतक चढता तेरा रग॥

[७]

महादेवि ! कल्याणि! विश्व मे गूँजे तेरा गान।
तेरी तान तान पर नाचे यह ब्रह्माड महान॥
नाचे नियति सुमन गण नाचे नाचे धन बल ज्ञान।
वैर भाव भुल जाय बने सब सच्चे बन्धु-समान॥



माता अहिंसा

[१]

माता करदे जग पर छाया ।
तेरे विना न कभी किसीने थोडा भी सुख पाया ॥ माता ॥
जब पशु के समान था मानव,
कुछ मनुष्य थे राक्षस दानव ।
'जिसकी लाठी, भैंस उसीकी' एक यही था न्याय ।
यत्र तत्र सर्वत्र भरी थी बस निर्बल की हाय ॥
करती थी तेरा आह्वान,
मन ही मन था तेरा ध्यान ।
तूने ही उस घोर निशामे निज प्रकाश फैलाया ॥ माता ॥

[२]

माता करदे जग पर छाया ।
हिंसा दुष्ट डाकिनी अपनी फैलाती है माया ॥ माता ॥
अपना नाना रूप बनाकर,
मंदिरमे मसजिद मे जाकर ।
नंगा तांडव दिखलाती है अट्टहास्य के साथ ।
धर्म नाम लेकर धर्मी पर फेर रही है हाथ ॥
करदे उसका भंडाफोड ।
उसका मायागढ दे तोड ॥
अणु अणु चिल्ला उठे विश्वका 'प्रेम राज्य है आया' ॥ माता ॥

[३]

माता करदे जग पर छाया ।
निर्दयताने नग्न नाच कर अद्भुत रूप बनाया । माता ॥
इधर हमें है जगत विषम पथ ।
उधर उसे है स्वार्थ महारथ ॥
नचा नचाकर भगा भगा कर करती है आखेट ।
कुचली जाती पीठ और कुचला जाता है पेट ॥
रक्खा पूर्ण सभ्यता वेष ।
पर सब प्राण हुए नि शेष ॥
रखकर देवीवेष राक्षसीने क्या प्रलय मचाया ॥ माता ॥

[४]

माता करदे जग पर छाया ।
वेर स्वार्थ सकुचित वासनाओने जगत सताया ॥ माता ॥
कही सम्प्रदायो को लेकर ।
कुलकी कही दुहाई देकर ॥
कही रग पर कही राष्ट पर मरता मानव आज ।
वेर और मद की मारो से है चकचूर समाज ॥
सुरगति नरक बनी है हाय ।
यदि तू किसी तरह आ जाय ॥
तो फिर नरक स्वर्ग बन जाये बदले सारी काया ॥ माता ॥



मातेश्वरि

[१]

मातेश्वरि तेरा अचल ।
सकल अनर्थों से रक्षित कर देता है मुझको बल ।
मातेश्वरि तेरा अचल ॥

[२]

तेरे बिना न कभी किसी को पड सकती पलभर कल ।
तेरे अचलकी छायामे मिट जाते छाया छल ॥
मातेश्वरि तेरा अचल ॥

[३]

धर्म तत्त्वके विविध रूप है तेरी करुणाके फल ।
तू न जहा है वहा धर्म मे भी है पाप निरर्गल ॥
मातेश्वरि तेरा अचल ॥

[४]

तीर्थकर पैगंबर ऋषि मुनि या अवतारो का दल ।
है तेरे ही पुत्र पिलाते है जगको शम रस जल ॥
मातेश्वरि तेरा अचल ॥

[५]

तेरे अचलकी छायामे, बीते जीवन के पल ।
सब चचल हो किन्तु नहीं हो तेरा अचल चचल ।
मातेश्वरि तेरा अचल ॥

अहिंसा देवी

कहो कहो देवि ! छिपी कहा हो ।
पता बताओ रहती जहा हो ॥
पड़ा हमारे सिर दु:ख जैसा ।
अराति के भी सिर हो न वैसा ॥ १ ॥

बढ़ी यहा भौतिक सम्पदा है ।
परन्तु आत्मा पर आपदा है ।
मनुष्यको खून चढ़ा हुआ है ।
विनाश की ओर बढ़ा हुआ है ॥ २ ॥

स्वजाति-भक्षी पशु भी न होते ।
मनुष्य ही लेकिन नीति खोते ॥
मनुष्य भी भक्ष्य हुआ यहा है ।
पशुत्व यो लज्जितसा कहा है ॥ ३ ॥

मनुष्य मे भी समभाव छोड़ा ।
मनुष्यता से सहयोग तोड़ा ॥
हुए यहा युद्ध विनाशकारी ।
मनुष्यने मानवता बिसारी ॥ ४ ॥

मनुष्य को पाशव-मात्र प्यारे।
लगे इसीसे बलहीन मारे॥
सुशीलता का पद है न बाकी।
हुई बड़ी दुर्गति न्याय्यता की॥ ५॥

रँगे सभी के मन स्वार्थिता से।
भला रँगे क्यों परमार्थिता से।
बटा अविश्वास अशान्तिकारी।
हुए सभी चिन्तित—वृत्तिधारी॥ ६॥

न देख पाई सुषमा तुम्हारी।
दुखापहारी निज सौख्यकारी॥
हुए हमारे गुण नष्ट सारे।
मरे बने जीवित ही विचारे॥ ७॥

पशुत्व के सद्म बने हुए हैं।
अशान्ति में नित्य सने हुए हैं॥
रही न मैत्री अविवेक आया।
विपत्तियों ने दिनरात खाया॥ ८॥

हुई हमारे मनमें निराशा।
कृपा करो देकर पूर्ण आशा॥
प्रसन्नता से हमको सम्हालो।
विरोध का बन्धन तोड़ डालो॥ ९॥

दीदार

है भला ससार भर का सत्य के दीदार मे ।
चाहता जीवन बिताना सत्यके ही प्यार मे ॥१॥
थे घमडी जब, न तब था जीतमे भी यह मजा ।
आज जो मिलता मजा है प्रेमकी इस हार मे ॥२॥
लट झगडकर मर रहे थे हाय कल तक किस तरह ।
आज कैसे बँध रहे है प्रेम के इस तार मे ॥३॥
कल यहा दोजख बना था, देखते है आज क्या ।
किस तरह झाँकी बनी है सत्यके दर्बार मे ॥४॥
मजहबो का, जातियो का आज पागलपन गया ।
अक्ल आई है ठिकाने युक्तियो की मार मे ॥५॥
मजहबो मे जातियो मे अब हुआ समभाव है ।
धर्म दिखता है हमे अब प्रेम के व्यवहार मे ॥६॥
मन्दिरो मे, मसजिदों मे, चर्च मे है भेद क्या ?
सत्य प्रभु तो सब जगह है सत्यमय आचार मे ॥७॥
अब विवेकी हो गये हम, है सुधारकता मिली ।
बहगई है अन्धश्रद्धा ज्ञान-जल की धार मे ॥८॥
मिल गई माता हमे है अब अहिंसा भगवती ।
भूल बैठे स्वार्थ सारे आज माँ के प्यार मे ॥९॥
चाहिये दीदार तेरा और कुछ भी दे न दे ।
घुस पडा है अब भिखारी आज तेरे द्वार मे ॥१०॥

म० सत्य का सन्देश

निष्पक्ष और निर्लेप, बुद्धि–
आकाश समान बनाओगे।
भगवती अहिंसा की सेवा कर–
प्रेम––धर्म अपनाओगे ॥ १ ॥

भूतल मे सब ही मित्र रहे
मन मे न शत्रुता लाओगे।
तो फिर मै तुम से दूर नही।
घर घर मेरा घर पाओगे ॥ २ ॥

म० अहिंसा का सन्देश

सब शान्त रहो सब शान्ति करो।
दु स्वार्थ न मन मे आने दो।
रगडे झगडे सब दूर करो।
जगको प्रेमी बन जाने दो ॥ १ ॥

दुर्जनता का सहार करो।
सज्जनता को जय पाने दो।
हिसा का राज्य न आने दो।
पर कायर मत कहलाने दो ॥ २ ॥

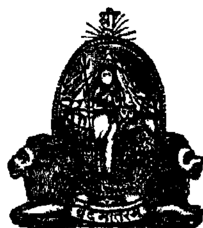
भारत माता

हे भुवन-मोहनी प्यारी भारत माता ।
तेरे सुपुत्र हो अखिल जगत के त्राता ॥
तुझको विधिने सब-विध सम्पूर्ण बनाया ।
गंगा सा सुन्दर हार तुझे पहनाया ।
फिर अमल धवल हिमगिरिसा छत्र लगाया ।
रत्नाकर तेरे पद पखारने आया ॥
शुक पिक द्विरेफ दल तेरा ही गुण गाता ।
हे भुवन—मोहनी प्यारी भारत माता ॥ १ ॥
फल फूल खनिज सब रत्नो का आकर तू
जल दुग्ध सुधा रस-राजो का निर्झर तू ।
नाना ओपधि से सब को चिन्ता—हर तू ।
मधुकर नभचर जलचर थलचर का घर तू ॥
तन अजब अजायब घर सा है दिखलाता ।
हे भुवन—मोहनी प्यारी भारत माता ॥ २ ॥
सब ऋतुएँ सज श्रृंगार यहा आतीं है ।
अपना अपना नवनृत्य दिखा जातीं है ।
निज निज स्वर मे तेरे गुणगुण गाती है ।
तेरे आँगन मे नाटक दिखलाती है ॥
सब ओर प्रकृति ने भर दी है सुखसाता ।
हे भुवन—मोहनी प्यारी भारत माता ॥ ३ ॥

है राम कृष्ण से तूने पूत्र खिलाये ।
जिन वीर बुद्ध से तेरी गोदी आये ।
तेरे पुत्रों ने ऐसे कार्य दिखाये ।
भगवान सत्य के परम दूत कहलाये ।
तेरा सुपुत्र करुणा का पुत्र कहाता ।
हे भुवन-मोहनी प्यारी भारत माता ॥ ४ ॥
सीता सावित्री तूने बहुत खिलाईं ।
काली समान भी शक्ति देवियाँ पाईं ।
विधिने विभूतियाँ गिन गिन कर पहुँचाईं ।
सब दिव्य शक्तियाँ तुझ रिझाने आईं ॥
तेरी महिमा से कौन नहीं झुक जाता ।
हे भुवन-मोहनी प्यारी भारत माता ॥ ५ ॥
अध्यात्म यहां तेरे आँगन में खेला ।
नाना वादों के खिले चमेली बेला ॥
फुलवाडी मे लग गया सुमन का मेला ।
तेरे सुमनों का बना विश्वभर चेला ॥
था कर्मयोग योगेश सुरस बरसाता ।
हे भुवन--मोहनी प्यारी भारत माता ॥ ६ ॥
करती रहती नाना पट परिवर्तन तू ।
तुझको न क्रान्तिका डर है निर्भय मन तू ।
सब धर्म जाति के जनका पैतृक धन तू ।
है सकल सभ्यताओं का परम मिलन तू ॥
सब ओर समन्वय छाया जीवन दाता ।
हे भुवन मोहन प्यारी भारत माता ॥ ७ ॥

कोई हिन्दू या मुसलमान हो भाई ।
जरथुस्त-भक्त, या सिक्ख, जैन, ईसाई ॥
या धर्म-हीन हो नास्तिकता हो छाई ।
सब तेरे सुत तू बनी सभी की माई ॥
सब से है तेरा एक सरीखा नाता ।
हे भुवन-मोहनी प्यारी भारतमाता ॥ ८ ॥
तेरी सेवा मे सारी शक्ति लगाऊ ।
तेरे कणकण पर जीवन दीप जलाऊ ।
तेरी वेदी पर मन का सुमन चढाऊँ ।
मानवता का सगीत मनोहर गाऊ ।
तेरा गुण गाते सुरगुरु भी न अघाता ।
हे भुवन-मोहनी प्यारी भारतमाता ॥ ९ ॥
अपनी झॉकी फिर एक बार दिखलादे ।
दुनिया पर जीवित शान्ति चन्द्रिका छादे ।
सच्ची स्वतन्त्रता का सन्देश सुनादे ।
घर घर मे प्रेमामृत की धार बहादे ॥
सब वैर नष्ट हो प्रेम रहे मन भाता ।
हे भुवन-मोहनी प्यारी भारतमाता ॥ १० ॥
मानवता के सिरपर दानव न खडा हो ।
अन्यायी, सत्पथ मे आडे न अड़ा हो ।
मन प्रेम-पूर्ण हो पापो का न घडा हो ।
साम्राज्यवाद के चक्कर मे न पडा हो ॥
मानव का मानव रहे सर्वदा भ्राता ।
हे भुवन-मोहनी प्यारी भारतमाता ॥ ११ ॥

सदसद्विवेक का सूर्य तपे तमहारी ।
भगवान सत्य के दर्शन हो सुखकारी ।
बनजाँय स्वार्थ-त्यागी सब ही नरनारी ।
भगवती-अहिंसा-सेवक प्रेम पुजारी ॥
वैकुण्ठ दिखाई दे भूतल पर आता ।
हे भुवन-मोहनी प्यारी भारतमाता ॥ १२ ॥
हो सर्व-धर्म-समभाव सभी के मन में ।
रह जातिपाँति का रोग न हो जीवनमें ।
मानवता महके तेरे श्वास पवन में ।
सत्प्रेम फले फूले तेरे आँगन में ॥
गुलजार चमन बनजाय सकल सुखदाता ।
हे भुवन-मोहनी प्यारी भारतमाता ॥ १३ ॥



प्यारा हिन्दुस्थान

प्यारा हिन्दुस्थान हमारा ।
सेवा शक्ति प्रेम की धारा ॥

यहा प्रकृति की छटा निराली ।
सब ऋतुओ की है हरियाली ।
फूल खिले हैं डाली डाली ॥

कण कण जिसका लगता प्यारा ।
प्यारा हिन्दुस्थान हमारा ॥ १ ॥

दिग्विजयी गिरिराज हिमालय ।
गगा के निर्मल जल की जय ।
प्रकृति नटी नचती है निर्भय ।

है विस्तीर्ण समुद्र किनारा ।
प्यारा हिन्दुस्थान हमारा ॥ २ ॥

सब ऋतु के अनुकूल फूल है ।
अन्न शाक फल कन्दमूल है ।
मन चाहे फल रहे तूल हैं ।

ईश्वर का है परम दुलारा ।
प्यारा हिन्दुस्थान हमारा ॥ ३ ॥

राम कृष्ण से वीर यहा थे ।
वीर बुद्ध से वीर यहा थे ।
व्यास ज्ञान-गभीर यहा थे ।

अनुपम है सौभाग्य सितारा ।
प्यारा हिन्दुस्थान हमारा ॥ ४ ॥
नानक और कबीर यहां थे ।
एक एक से पीर यहां थे ।
सच्चे सन्त फकीर यहां थे ।
मकसद एक रूप था न्यारा ।
प्यारा हिन्दुस्थान हमारा ॥ ५ ॥
जैमिनि कपिल बृहस्पति धीधन ।
गौतम शुक्र कणाद तर्कमन ।
सब ने दिया ज्ञान मे जीवन ।
बही विविध दर्शन की धारा ।
प्यारा हिन्दुस्थान हमारा ॥ ६ ॥
महासती सीता सी पाई ।
सरस्वती विदुषी बन आई । ॥
लक्ष्मी रणरंगिणी दिखाई ।
अद्भुत नारीरत्न-पिटारा ।
प्यारा हिन्दुस्थान हमारा ॥ ७ ॥
भूपति त्याग प्रेम के आकर ।
सारा विश्व जिन्हे अपना घर ।
थे अशोक से नृपति यहां पर ।
जिनका धर्म देख जग हारा ।
प्यारा हिन्दुस्थान हमारा ॥ ८ ॥

विक्रम से रणधीर यहा थे।
अकबर आलमगीर यहा थे।
और शिवाजी वीर यहां थे।
चकित किया था यह जग सारा।
प्यारा हिन्दुस्थान हमारा ॥ ९ ॥

विविध कला विज्ञान यहां पर।
फूले फले फिरे भूतल भर।
सयम और सभ्यता का घर।
बना सदा सुख-शान्ति-किनारा।
प्यारा हिन्दुस्थान हमारा ॥ १० ॥

हिन्दू मुसलमान है भाई।
बौद्ध सिक्ख जैनी ईसाई।
प्रेम नाम की महिमा गाई।
रहा सभी मे भाई चारा।
प्यारा हिन्दुस्थान हमारा ॥ ११ ॥

अब उन्नति गिरिपर चढ जाये।
जगका परम मित्र कहलाये।
सब को प्रेम पाठ सिखलाये।
मानवता का हो ध्रुवतारा।
प्यारा हिन्दुस्थान हमारा ॥ १२ ॥



भावनागीत

(सर्व-धर्म-समभाव)

(१)

सत्य अहिंसा के पालन में, जीवन यह होजाय व्यतीत ।
पक्षपात से दूर रहे मन, दुःस्वार्थों से रहे अतीत ॥
सर्व-धर्म समभाव न भूलूं, अहंकार का करूं अवसान ।
मन मन्दिर में सब धर्मोंके, तत्त्वों का मैं गाऊं गान ॥

(२)

बुद्धि विवेक न छोड़ू क्षणभर, आने दूं न अन्धविश्वास ।
परम्परा के गीत न गाऊं, करूं न मानवता का ह्रास ॥
सकल महात्मा पुरुषों में हो, समता का न कभी विच्छेद ।
हैं ये विश्व-विभूति न इन में, हो मेरा तेरा का भेद ॥

(३)

राम महात्मा के पथ पर हो, मेरा यह जीवन कुर्बान ।
मर्यादा पर मरना सीखूं, सीखूं धनमद का अपमान ॥
योगेश्वर श्रीकृष्णचन्द्र से, सीखूं कर्मयोग का गान ।
योग भोग का करूं समन्वय, करूं फलाशा का अवसान ॥

(४)

महावीर स्वामी से सीखूं, दिव्य अहिंसा दर्शन ज्ञान ।
कर दूं सहनशीलता पाकर, जन सेवा में जीवनदान ॥
बुद्ध महात्मा के जीवन से, पाऊं दया और सद्बोध ।
दुनिया का दुख दूर करूं मैं, कर दूं पापों का पथरोध ॥

(५)

सीखू सेवापाठ सर्वदा, रख ईसामसीह का ध्यान ।
बनू दुखी को देख दुखी मै, करू न दुख मे दुख का भान ॥
सीखू वीर मुहम्मद से मै, भ्रातृभाव का सद्व्यवहार ।
साम्यभाव का पाठ पढू मै, मानवता का करू प्रचार ॥

(६)

देवजर्थी जरथुस्त महात्मा कन्फ्यूसियस नीति-दातार ।
सकल महात्मा बच मुझ हो विश्वबन्धुता के अवतार ॥
मन्दिर जाऊ मसजिद जाऊ, जाऊ गिरजाघर के द्वार ।
सब मे है भगवती अहिसा, लगा सत्य प्रभु का दर्बार ॥

(सर्वजाति-समभाव)

(७)

जातिपाति का भेद भुला दू, रक्खू सर्व-जाति-समभाव ।
कुलकी उच्चनीचता भूलू, कोई रहे रक या राव ॥
स्वार्थ-हीन सच्चे सेवक को, समझू मै श्रीमान कुलीन ।
स्वार्थ-मूर्त्ति पर-पीडक को ही, समझू नीच तुच्छ अतिदीन ॥

(८)

मानवता का बनू पुजारी, विश्व-प्रेम हो सदा अनन्त ।
जातिमदो को विफल बना कर, अहकार का करदू अन्त ॥
समझू नही अछूत किसी को, सब मनुष्य हो बन्धुसमान ।
भूल चूक से भी न करू मैं, इनका थोडा भी अपमान ॥

(९)

पतित हो कि हो दीन सभी में, सत्य धर्म का करूं प्रचार ।
स्वयं न छीनूं छिनने न दूं, जन्मसिद्ध सबके अधिकार ॥
ठेका हो न धर्म कार्यों का, कर दूं मैं इसको निःशेष ।
गुण का आदर रहे जगत मे, करे न तांडव कोई वेष ॥

(१०)

प्रेम की न हो सीमा मेरे, ग्राम प्रान्त कुल जाति स्वदेश ।
विश्व देश हो, मनुज जाति हो, हो न क्षुद्रता का लवलेश ॥
जिधर न्याय हो उधर पक्ष हो, हो विपक्ष मे अत्याचार ।
पीडित जन बान्धव हो मेरे, उनसे करूं हृदय से प्यार ॥

(११)

नर नारी का पक्ष नहीं हो, मानूं दोनो के अधिकार ।
करें परस्पर त्याग सर्वदा, हो न किसी को कोई भार ॥
प्रतिद्वंदिता रहे न उनमे, दो तनपर हो जीवन एक ।
रंग एक हो ढंग एक हो, स्वार्थों का न रहे अतिरेक ॥

(नीतिमत्ता)

(१२)

मित्र शत्रु मध्यस्थ जनो पर, करूं न थोटा भी अन्याय ।
न्यायमार्ग के रक्षण में ही, तन मन धन जीवन लग जाय ॥
सकल जगत की सुख साता मे, समझूं मै अपना कल्याण ।
जहा जरूरत हो जीवन की, वहा लगा दूं अपने प्राण ॥

(१३)

करुणाशील हृदय हो मेरा, रहूं सदा हिंसा से दूर ।
दिल न दुखाऊं कभी किसीका, किसी तरह भी बनूं न क्रूर ।।
जिऊं जगत को भी जीने दूं, पालन करूं सदा यह नीति ।
सौम्यरूप हो सब कुछ मेरा, मुझसे हो न किसी को भीति ।।

(१४)

विविध कष्ट सह कर भी बोलूं, सदा सभी से सच्ची बात ।
कभी न वंचित करूं किसीको, हो न कभी कटुवचनाघात ।।
कोमल प्रेमजनक शब्दों का, हो मुझसे सर्वदा प्रयोग ।
करूं न मैं अपमान किसी का, और न हो गाली का रोग ।।

(१५)

चौर्य-वासना से थोड़े भी, परधन को न लगाऊं हाथ ।
प्रगट या कि अप्रगट रूप में, दूं न कभी चोरों का साथ ।।
न्यायमार्ग से जो कुछ पाऊँ, उसमें रहे पूर्ण संतोष ।
अटल रहे ईमान सर्वदा, निर्धनता में भी निर्दोष ।।

(१६)

जीवन अतिपवित्र हो मेरा, दूर रहे मुझसे व्यभिचार ।
प्रेम रहे, पर प्रेम नाम पर, हो न हृदय यह पापागार ।।
नारी पर दुर्दृष्टि नहीं हो, हो तो ये आँखें दूं फोड़ ।
अगर कुचेष्टा करें हाथ तो, दूं इनकी हड्डियाँ मरोड़ ।।

(१७)

धन संयम पालन करने को करूं लालसाओं को चूर ।
वैभव में न महत्त्व गिनूं मैं, रहूं सदा धनमद से दूर ।।

संग्रह की न लालसाएँ हो, पाऊँ धन करदू मैं दान।
साथ न आता साथ न जाता, फिर क्यों संग्रह क्यो अभिमान ॥

आत्मसंयम

(१८)

पागल बना न पावे मुझको, जीवन--शत्रु दुष्टतम क्रोध।
क्षमा भाव हो मन पर मेरा, करू कुपथ का मैं अवरोध ॥
बनू पाप का ही वैरी मै, पापी को समझू बीमार।
जिस की जैसी बीमारी हो, उसका वैसा हो उपचार ॥

(१९)

बल यश बुद्धि विभव सुन्दरता कुल आदिक का न रहे मान।
विनय-मूर्त्ति होने को समझू, गौरव की सच्ची पहिचान ॥
आत्म-प्रशसा करू न मदवश ईर्ष्या से मै करू न हाय।
कभी न यह चरितार्थ करू मै, 'अधजल गगरी छलकत जाय' ॥

(२०)

रहू दम्भ से दूर सर्वदा, हो न तनिक भी मायाचार।
ढोगो को निर्मूल करू मै, माया-शून्य रहे आचार ॥
ख्याति लाभ के लालच से मै, नही करू झूठा तप त्याग।
अन्य ढोग या वचकता मे, थोडा भी न रहे अनुराग ॥

(२१)

मैं मन की निर्लोभवृत्ति को, समझू शौच धर्म का सार।
बनू स्वच्छतासेवी फिर भी, करू न छूत अछूत विचार ॥
हिंसाहीन स्वच्छ खाद्यो को, समझू भोजन का सामान।
शौच धर्म की आड लगाकर, करू नहीं पर का अपमान ॥

(२२)

सेवा करने में सहना हो, भूख आदि शारीरिक क्लेश ।
तो भी रहूं प्रसन्न हृदय मे, आने दू न खेद का लेश ॥
सार्थक कष्ट सहन को ही मैं, समझू बाह्य तपो का काम ।
अन्य निरर्थक कष्ट सहन को, समझू मै केवल व्यायाम ॥

(२३)

सच्चा तप है शुद्ध हृदय से कृत पापो का पश्चात्ताप ।
सेवा विनय ज्ञान से होता सत्य तपस्याओ का माप ॥
बनू तपस्वी ऐसा ही मैं, स्वार्थहीन छल छद्मविहीन ।
स्वार्थ वृत्तियाँ नष्ट करू मैं, रहू सदा सेवा मे लीन ॥

(२४)

हो न स्वाद-लोलुपता मुझमे, जिह्वा को करलू स्वाधीन ।
सरस हो कि नीरस भोजन हो, रहू सदा समता में लीन ॥
जीवित और स्वस्थ रहना ही, हो मेरे भोजन का ध्येय ।
सकल इन्द्रियाँ हो वश मेरे , सकल दुर्व्यसन हो अज्ञेय ॥

विश्वप्रेम

(२५)

दुखित जगत के आँसू पोछूँ, हो सदैव यह मेरी चाह ।
दुनिया का सुख हो सुख मेरा, दुनिया का दुख अश्रु-प्रवाह ॥
दुखित प्राणियों की सेवा मे, मरते मरते करूं न आह ।
काँटो में बिछ कर भी दू मैं, पथ-हीन जनता को राह ॥

(२६)

भूखे को भोजन सदैव दूँ, प्यासे को पानी का दान।
गुरुपन का अभिमान न रखकर, दूँ भूले भटके को ज्ञान॥
सेवा करूँ सदैव दीन की, रोगी को दूँ औषध पान।
पीडित जन के संरक्षण में, हो मेरा जीवन कुर्बान॥

(२७)

जग की माया जग की समझूँ, पाऊँ तो करदूँ मैं त्याग।
रहूँ अकिंचन सा बनकर मैं, तृष्णा का लगाऊँ दाग॥
सुख दुख में समता हो मेरे डस न सके भयरूपी नाग।
मरने की न भीति हो मुझको, जीने का न अन्ध अनुराग॥

(२८)

मैत्री हो समस्त जीवों में, विश्वप्रेम का बनूँ अगार।
गुणियों में प्रमोद हो मेरा, हो उनका पूजा सत्कार॥
पर दुखको निज दुख सम समझूँ, दुखित जीव पर हो कारुण्य।
दुर्जन पर माध्यस्थ्य भाव हो, समझूँ मैं सेवा मे पुण्य॥

कर्मयोग

(२९)

रहूँ सदा उद्योगी बनकर, कर्मयोग हो जीवनमंत्र।
करूँ सभी कर्तव्य किन्तु हो, हृदय वासना-हीन स्वतन्त्र।
अकर्मण्य बनकर न करूँ मैं, ख्याति लाभ पूजा वश त्याग॥
वेष दिखा कर हो न त्याग के, नाटक में मुझ को अनुराग॥

(३०)

छोटा सा यह जीवन मेरा, हो न किसी के सिर पर भार।
रहू परिश्रमशील सर्वदा, श्रम को कहू न पापाचार ॥
सह न सकू दुर्बल दीनो पर, बलवानों के अत्याचार।
तत्पर रहू न्यायरक्षण मे, हरता रहू सदा भूभार ॥

(३१)

कायरता न फटकने पावे, बनूं मौत से निर्भय वीर।
प्राण हथेली पर लेकर मै, बढू रहू विपदा मे धीर ॥
विपत विरोध उपेक्षा मिलकर, कर न सके साहसका नाश।
कर न सके असफलताएँ भी, कार्यक्षेत्र मे मुझे निराश।

(३२)

धर्म अर्थ हो काम मोक्ष हो, रक्खू मै चारो पुरुषार्थ।
एकागी जीवन न बनाऊ, सकल--समन्वय है परमार्थ ॥
सभी रसो का समय समय पर करता रहू उचित उपयोग।
करुणा वीर हास्य वत्सलता, सब का निर्विरोध हो भोग ॥

(३३)

दुनिया की नाटकशाला मे, खेलू सभी तरह के खेल।
लेकिन पाप न आने पावे, हो न सुधा मे विषका मेल ॥
कर्मों मे काशल हो मेरे हो सब चिंताओ का अन्त।
मुखमुद्रा कैसी भी हो पर, रहे हृदय मे हास्य अनन्त ॥

(३४)

रहू अहिंसा की गोदी में, सत्य करे लालन मेरा।
न्याय नीतियो के कर तल पर, हो सदैव पालन मेरा ॥

सत्य अहिंसा की सन्तति बन, शुद्ध मनुष्य कहाऊ मै।
परहित और न्याय-रक्षण कर. सत्यभक्त बन जाऊ मै॥

क्या

सत्य अहिंसाको पाया तो, और रहा तब पाना क्या रे,
उनका गाया गान अगर तो, और रहा फिर गाना क्या रे॥

[१]

सर्वधर्मसमभाव न सीखा, तो फिर सीख सिखाना क्या रे,
सब की जाति समान न देखी, तो फिर प्रेम दिखाना क्या रे॥

[२]

जो न सुधारक तू कहलाया, तो मुखिया कहलाना क्या रे,
मन को जो न कभी नहलाया, तो तनको नहलाना क्या रे॥

[३]

अन्यायो पर की न चढाई, तो फिर बाँह चढाना क्या रे,
सद्गुणगण को जो न बढाया, तो फिर ठाठ बढाना क्या रे॥

[४]

नीति मरी ईमान मरा तो, और रहा मरजाना क्या रे,
मन की गगरी प्रेम भरी तो, और रहा भर जाना क्या रे॥

[५]

हित अनहित पहिचान न पाया, तो जग को पहिचाना क्या रे,
दुखियो की कुटियों न गया तो, फिर मंदिर का जाना क्या रे॥

[६]

परदुख मे आँसू न बहाये, निज दुख देख बहाना क्या रे,
सेवक जो जग का न कहाया, तो भगवान कहाना क्या रे॥

[७]

दुखियो के मन पर न चढा तो, तीर्थों पर चढ जाना क्या रे,
विपदा मे हँसना न पढा तो, पोथो का पढ जाना क्या रे॥

[८]

कायरता यदि हट न सकी तो, निर्बलता हटजाना क्या रे,
कर्मठता यदि घट न सकी तो तन बल का घट जाना क्या रे॥

[९]

कर कर्तव्य न पाठ पढाया, बक बक पाठ पढाना क्या रे,
जीवन देकर सिर न चढाया, तो फिर भेट चढाना क्या रे॥

[१०]

सुखदुख मे समभाव न जाना, तो जीवनमे जाना क्या रे,
जो न कला जीवन की आई, तो दुनिया मे आना क्या रे॥

[११]

जो मन की कलियाँ न खिलीं तो यौवनका खिल जाना क्या रे,
सत्येश्वर की भक्ति मिली तो, ईश्वर मे मिल जाना क्या रे॥

राम-निमंत्रण

हे राम विपत् पर रामबाण बनजाओ ।
भूभार-हरण के लिये धरा पर आओ ॥

(१)

भूभार बढ़ा है, पाप बढ़े जाते है ।
अन्याचारों के ताडव दिखलाते है ॥
दुर्जन दु स्वार्थी पापी इठलाते है ।
सज्जन परोपकारी न चैन पाते है ॥
आओ अन्यायो का विनाश करजाओ ।
भूभार-हरण के लिये धरा पर आओ ॥

(२)

अपनी विपदा को आप बढ़ाया हमने ।
धन-धान्य स्वत्व अधिकार गमाया हमने ।
होकर मनुष्य मानुष्य न पाया हमने ।
इस घर को भी परदेश बनाया हमने ॥
आओ स्वतन्त्रता की झॉकी दिखलाओ ।
भूभार-हरण के लिये धरा पर आओ ॥

(३)

नारीत्व आज पद-दलित हुआ जाता है ।
दाम्पत्य-प्रेम पदपद ठोकर खाता है ।
भ्रातृत्व और मित्रत्व न दिखलाता है ।
सज्जनता पर दौर्जन्य विजय पाता है ।
अन्धेर मचा है आओ इसे मिटाओ ।
भूभार-हरण के लिये धरा पर आओ ॥

(४)

दुर्दैववादने पौरुष मार हटाया ।
भीरुत्व, दया का छद्म-वेष धर आया ।
कायरताने जड़ता का राज्य जमाया ।
हममें उत्तरदायित्व नहीं रह पाया ॥
आओ हमको पुरुषार्थी वीर बनाओ ।
भूभार-हरण के लिये, धरा पर आओ ॥

(५)

नैतिक मर्यादा नष्ट होरही सारी ।
बन रहा जगत है, केवल रूढ़ि-पुजारी ।
सदसद्विवेकमय बुद्धि गई है मारी ।
है तमस्तोमसा व्याप्त दृष्टि-अपहारी ॥
तुम सूर्यवंश के सूर्य प्रकाश दिखाओ ।
भूभार-हरण के लिये धरा पर आओ ॥

(६)

विपदाएँ अपना भीष्म-रूप बतलाती ।
मन-मन्दिर मे भारी तूफान मचाती ।
ताडव दिखलाती फिरती है मदमाती ।
धीरज विवेक बल तहस नहस कर जाती ॥
आओ जगल मे मगल हमे सिखाओ ।
भूभार-हरण के लिये धरा पर आओ ॥

(७)

ये बिछारहे है जाल असख्य प्रलोभन ।
है लूट रहे सर्वस्व दिखाकर जडधन ॥
नि सत्त्व बताते है, कर्तव्य चिरन्तन ।
करते है ये उद्देश्य-हीन चञ्चल मन ।
आओ प्रलोभनो को अब मार हटाओ ।
भूभार-हरण के लिये, धरा पर आओ ॥

(८)

तुम सत्य अहिसा के हो पुत्र दुलारे ।
वीरत्व त्याग धैर्यादि गुणों के प्यारे ॥
तुम कर्मयोग की मूरति बन्धु हमारे ।
तुम अन्धे जग के लिये नयन के तारे ।
आओ घर घर मे राम जन्म करवाओ ।
भूभार-हरण के लिये धरा पर आओ ॥

महात्मा राम

(१)

नैतिकता की मर्यादा पर सर्वस्व दान करनेवाला ।
जगल मे भी जाकर मगल का नव–वसन्त भरनेवाला ॥
हँसते हँसते अपने भुजबल से दुख- समुद्र तरनेवाला ।
तू मर्यादा--पुरुषोत्तम था ससार-दु ख हरनेवाला ॥

(२)

तू सूर्यवश का सूर्य रहा जगको प्रकाश देनेवाला ।
अवतार वीरता का था तू दुखियो की सुध लेनेवाला ॥
यद्यपि तू रघुकुलदीपक था पर सबका नयन सितारा था।
बधन कुलजाति न था तुझको तू विश्व मात्रका प्यारा था॥

(३)

तुझको जैसा सिंहासन था वैसी ही वनकी कुटिया थी ।
जैसा सोनेका पात्र तुझे वैसी ताँबेकी लुटिया थी ॥
तेरा था भोगी वेष मगर भीतर से था योगी सच्चा ।
तू अग्नि-परीक्षाओ मे भी पडकर न कभी निकला कच्चा॥

(४)

तेरा पत्नीव्रत सतीजनो के पातिव्रत्य समान रहा ।
तुझको प्रेमीके साथ पुजारी बनने का अरमान रहा ॥
सीता बिछुड़ी अथवा त्यागी तुझको उसका ही ध्यान रहा।
ऋषि ब्रह्मचारियों से भी बढकर था तेरा ईमान रहा ॥

(५)

तू था मनुष्यता का पूजक था सारा जगत समान तुझे ।
तेरा बधुत्व विशाल रहा सम थे लक्ष्मण हनुमान तुझे ॥
केवट हो, कपि हो, शबरी हो तूने सबको अपनाया था ।
जो जो कहलाते थे अनार्य छाती से उन्हें लगाया था ॥

(६)

शबरी के जूठे बेर ग्रहण करने मे नहीं लजाया था ।
तूने पवित्रता शौच धर्म बस प्रेम-भक्ति मे पाया था ॥
कुल जातिपाँति या उच्चनीच सबका रहस्य समझाया था ।
मानव का धर्म सिखाया था कुलमद को मार भगाया था ॥

(७)

तूने राक्षसपन नष्ट किया पर राक्षस नृपति बनाया था ।
सम्राट बना था पर तूने साम्राज्यवाद ठुकराया था ॥
दुर्जनता के क्षालन में तू सज्जनता के लालन मे तू ।
भगवती अहिंसा के दोनो रूपोंके परिपालन मे तू ॥

(८)

मर मिटने को तैयार रहा अन्याय अगर देखा तूने ॥
भगवान सत्य को ही दुनिया का सच्चा बल लेखा तूने ।
राक्षसताका सरदार मिला जिसका असख्य दल बल छल था ।
तू निराधार था सिर्फ तुझे अपने ही हाथो का बल था ॥

(९)

पर तू निर्भय हो गर्ज उठा अन्याय नहीं करने दूगा ।
सीता जावे मर मिटे राम पर न्याय नही मरने दूँगा ॥

जगकी पवित्रतम वस्तु सतीकी लाज नहीं हरने दूँगा।
अत्याचारी दुष्टों से मैं पृथिवी न कभी भरने दूँगा॥

(१०)

भुजबलका कुछ अभिमान न था वैभव भी तुझे न प्यारा था।
भय न था लालसा थी न तुझे तू निर्भयता का धारा था।
भगवान सत्यने वरद हस्त तेरे ऊपर फैलाया था।
भगवती अहिंसाने अपने अचल मे तुझे बिठाया था॥

(११)

विजयी बनकर साम्राज्य लिया फिर भी वनवासी बना रहा।
लकाको ठुकराया तूने तू अनासक्ति मे सना रहा॥
सर्वस्व त्याग करने मे भी तूने न तनिक सकोच किया।
जनता-रजन मर्यादा के रक्षणको तूने क्या न दिया॥

(१२)

कर्तव्य-यज्ञ की वेदीपर सीता का भी बलिदान किया।
आँखो मे आसू भरे रहे पर मुखको कभी न म्लान किया॥
तूने अपना दिल मसल दिया दुनियाके हित विषपान किया।
तू सच्चा योगी बना रहा जीवन सुखका अवसान किया॥

(१३)

आदर्श पुत्र था, त्यागी था, सेवा ही तेरा धर्म रहा॥
तूने विपत्तियो की वर्षाको हँस हँसकर सर्वदा सहा।
पुरुषोत्तम और महात्मा तू घर घरमे ख्याति हुई तेरी।
तेरे पद-चिह्न मिले मुझको इच्छा है एक यही मेरी॥

रा म

दिखा दो अपनी झाँकी राम !

कायर मनमे साहस लादो,
वैभवका कुछ त्याग सिखादो,
दुखमे भी हँसना सिखलादो,
हो जीवन निष्काम,
दिखादो अपनी झाँकी राम ॥ १ ॥

मरुथलमे भी जल बरसादो,
निर्बलमे भी बल बरसादो,
जगल में मगल बरसादो ।
जीवन दो सखधाम,
दिखा दो अपनी झाँकी राम ॥ २ ॥

दे दो अपनी करुणा का कण,
सीख सके पूरा करना प्रण,
रहे न कोई जग में रावण ।
रहे न जीवन श्याम,
दिखा दो अपनी झाँकी राम ॥ ३ ॥

मर्यादा पर मरना सीखे,
विपदाओ को तरना सीखे,
दुनिया का दुख हरना सीखे ।
लेकर तेरा नाम,
दिखादो अपनी झाँकी राम ॥ ४ ॥

वंशीवाले

वंशीवाले तनिक सुनाजा दुनियाको वंशी की तान ॥

(१)

जीवनमे रसधार बहाजा ।
सकल-रसोका सार बहाजा ।
तार तारमे प्यार बहाजा ।
हो पूरे अरमान ॥
वंशीवाले तनिक सुनाजा दुनियाको वंशी की तान ॥

(२)

सकल कलाओ का तू स्वामी ।
धर्मी अर्थी मोक्षी कामी ।
सत्य अहिंसा का अनुगामी ।
नामी कृपा-निधान ॥
वंशीवाले तनिक सुनाजा दुनियाको वंशी की तान ॥

(३)

पत्थर सा यह दिल पिघलाजा ।
ज्वलित नयन से नीर बहाजा ।
युग युग की यह प्यास बुझाजा ।
करे सुधाका पान ॥
वंशीवाले तनिक सुनाजा दुनियाको वंशी की तान ॥

(४)

यह जीवन रस-हीन बने जब ।
शोक सिन्धुमे लीन बने जब ।
अकर्मण्यताधीन बने जब ।
हो तब तेरा ध्यान ॥
वंशीवाले तनिक सुनाजा दुनियाको वंशी की तान ॥

(५)

बाहर जब होली मचती हो ।
घरमे तब वसन्त रचती हो ।
विपदाओ मे भी नचती हो ।
मनमोहन मुसकान ॥
वंशीवाले तनिक सुनाजा दुनियाको वंशी की तान ॥

(६)

अमर सत्य-संगीत सुनाजा ।
प्राणोको पीयूष पिलाजा ।
तान तानमे रस बरसाजा ।
आजा कर रसदान ॥
वंशीवाले तनिक सुनाजा दुनियाको वंशी की तान ॥

(७)

मेरे मन-मन्दिर मे आजा ।
मेरा टूटा तार बजाजा ।
सूना हृदय सजाजा, गाजा ।
कर्मयोग का गान ॥
वंशीवाले तनिक सुनाजा दुनियाको वंशी की तान ॥

महात्मा कृष्ण

तू था जीवन का रहस्य दिखलानेवाला
कर्मों मे कौशल्य-पाठ सिखलानेवाला ॥
योग भोगका सत्य समन्वय करनेवाला ।
सूखे जीवन मे अनन्त रस भरनेवाला ॥ १ ॥

सच्चा योगी और प्रेम-पथ पथिक रहा तू ।
विषयवासनाके प्रवाह मे नही बहा तू ॥
नयी प्रीति की रीति योगके सग सिखाई ।
मानो अम्बुदवृन्द सग चपला चमकाई ॥ २ ॥

जब समाज की दशा होरही थी प्रलयकर ।
अत्याचारी दुष्ट बने थे भूत भयकर ॥

मातपिताको पुत्र कैदखाना देता था ।
बहिन-बेटियों का सुहाग भी हर लेता था ॥ ३ ॥
छलबल का था राज्य नीति का नाम नहीं था ।
थे पेटार्थू लोग, सत्यसे काम नही था ।
सभ्यजनो मे भी न मान महिला पाती थी ।
जगह जगह वीभत्स वासना दिखलाती थी ॥ ४ ॥
ऐसा कोई न था समस्या जो सुलझाता ।
दिग्विमूढ़ मानव समाज को पथ बतलाता ॥
न्याय और सत्य की विजय को जान लडाता ।
पीडित की सुनकर पुकार जो दौडा आता ॥ ५ ॥
लाखो ऑखे बाट देखतीं थी तब तेरी ।
उनको होती थी असह्य क्षण क्षणकी देरी ॥
अगणित आहे रही वाष्पमय वायु बनाती ।
कर करुणा सचार हृदय तेरा पिघलाती ॥ ६ ॥
तू अदृश्य था किन्तु बुलाते थे तुझको सब ।
कहता था ससार 'अरे आवेगा तू कब' ?
'कब जीवन की कला जगत् को सिखलावेगा ?
सत्य अहिंसाका पुनीत पथ दिखलावेगा' ॥ ७ ॥
आखिर आया, हुई भयकर वज्र गर्जना ।
दहल उठे अन्याय, पाप की हुई तर्जना ॥
दुखी जगत् को देख सभीको गले लगाया ।
आखिर तू रो पडा, हृदय तेरा भर आया ॥ ८ ॥

मिला तुझे भगवान सत्यका धाम दु खहर ।
मन ही मन भगवती अहिंसाको प्रणाम कर ॥
माँगी तूने छोड स्वार्थमय सारी ममता ।
दुखी जगत् के दु ख दूर करने की क्षमता ॥ ९ ॥

दिव्य नेत्र खुल गये दु खका कारण जाना ।
जीने मरने का रहस्य तूने पहिचाना ॥
दुष्ट-नाश-सकल्प हृदय मे तूने ठाना ।
तूने निश्चित किया सत्य-सन्देश सुनाना ॥ १० ॥

कर्मयोग सगीत सुनाया तूने ज्यो ही ।
सकल मानसिक रोग निकलकर भागे त्यो ही ॥
किंकर्तव्यविमूढता न तब रहने पाई ।
अकर्मण्य भी कर्मपाठ सीखे सुखदाई ॥११॥

सर्व-धर्म-समभाव हृदयमें धरके तूने ।
सब धर्मों का सत्य समन्वय करके तूने ॥
मानव मनके अहकारको हरके तूने ।
मनुष्यता का पाठ दिया जी भरके तूने ॥१२॥

यद्यपि जगको सदा सत्य-सन्देश सुनाया ।
पर दुष्टोके लिये सुदर्शन चक्र चलाया ॥
दूतसूत ऋषि विविध रूप अपना बतलाया ।
जहाँ जरूरत पडी वहाँ तू दौडा आया ॥१३॥

तू छलियोको छली, योगियोको योगी था ।
था क्रूरोंको क्रूर, भोगियोको भोगी था ।

निज निजके प्रतिबिम्ब तुल्य तू दिया दिखाई ॥
मानो दर्पन-प्रभा रूप तेरा धर आई ॥१४॥

मुरली की ध्वनि कहीं, कही पर चक्रसुदर्शन ।
कहीं पुष्पसा हृदय, कही पर पत्थरसा मन ॥
कहीं मुक्त सगीत, कही योद्धाका गर्जन ।
कहीं डॉडिया रास, कही दुष्टोका तर्जन ॥१५॥

कही गोपियो सग प्रेमका शुद्ध प्रदर्शन ।
भाई बहिनो के समान लीलामय जीवन ॥
कही मल्लसे युद्ध कही बच्चासी बाते ।
बालक लीला कहीं, कही दुष्टो पर घाते ॥१६॥

कही राजके भोग कहीं पर सूखे चावल ।
कहीं स्वर्णप्रासाद कही विपदाओंका दल ॥
कहीं मेरु सा अचल कही बिजली सा चचल ।
बन्न भिखारी कही, कहीं अबलाका अचल ॥१७॥

कहीं सरलतम-हृदय कहीं पर कुटिल भयकर ।
कही विष्णुसा शान्त कही प्रलयेश्वर शकर ॥
कही कर्मयोगेश जगदगुरु या तीर्थकर ।
दुर्जनका यमराज सज्जनो का क्षेमकर ॥१८॥

मानव-जीवन के अनेक रूपोका स्वामी ।
सत्यदेव भगवती अहिंसाका अनुगामी ॥
तूने अगणित ज्ञान रत्न थे विश्वको दिये ।
मुझको बस तेरे अखड पदचिह्न चाहिये ॥१९॥

माधव

मेरी कुटीमे आना माधव, आना मेरे द्वार ।
सूरत तनिक दिखलाना माधव, आना मेरे द्वार ।
मत देखो मेरा रोना,
देखो मत घरका कोना,
मै दूँगा तुम्हे बिछौना,
तुम मेरे मनपर सोना,
फिर देना अपना प्यार ।
मेरी कुटीमे आना माधव, आना मेरे द्वार ॥१॥
यह खाट पड़ी है टूटी,
विपदाने कुटिया लूटी,
तकदीर हुई यो फूटी,
अपनो की संगति छूटी,
तुम हरना मेरा भार ।
मेरी कुटीमे आना माधव, आना मेरे द्वार ॥२॥
मुरली की तान सुनाना,
गीता का गाना गाना,
यो कर्मयोग सिखलाना,
दुखियो को भूल न जाना ।
तुम करना बेड़ा पार ।
मेरी कुटी मे आना माधव, आना मेरे द्वार ॥३॥

महावीरावतार

(१)

यद्यपि न किसी को ज्ञात रहा तू कब कैसे आजावेगा।
अंधी आँखों के लिये सत्यका पदरज अञ्जन लावेगा ॥
अज्ञानतिमिरको दूर हटाकर नवप्रकाश फैलावेगा।
रोते लोगों के अश्रु पोंछ गोदीमें उन्हें उठावेगा ॥

(२)

तो भी अपना अञ्चल पसार अवलाएँ ऊँची दृष्टि किये।
करती थीं तेरा ही स्वागत अञ्चल में स्वागत-पुष्प लिये ॥
अधिकार छिने थे सब उनके उनको कोई न सहारा था।
था ज्ञात न तेरा नाम मगर तू उनका नयन सितारा था।

(३)

पशुओं के मुखसे दर्दनाक आवाज सदा निकलती थी।
उनकी आहोंसे जगत् व्याप्त था और हवा भी जलती थी ॥
भगवती अहिंसाके विद्रोही धर्मात्मा कहलाते थे।
भगवान सत्यके परम उपासक पदपद ठोकर खाते थे।

(४)

पशुओ का रोना सुनकर के पत्थर भी कुछ रो देता था ।
पर पढे लिखे कातिल मूर्खोंका वज्र हृदय रस लेता था ।
था उनका मन मरुभमि जहाँ करुणारस का था नाम नहीं ॥
थे तो मनुष्य पर मनुष्यता से था उनको कुछ काम नहीं ॥

(५)

शूद्रोको पूछे कौन जाति-मद में डूबे थे लोग जहाँ ।
वे प्राणी हैं कि नहीं इसमे भी होता था सन्देह वहाँ ॥
उनकी मजाल थी क्या कि कानमे ज्ञानमत्र आने पावे ।
यदि आवे तो शीशा पिघलाकर कानोमे डाला जावे ॥

(६)

था कर्मकाडका जाल बिछा पड गये लोग थे बधन मे ।
था आडम्बरका राज्य सत्यका पता न था कुछ जीवन में ॥
ले लिये गये थे प्राण धर्म के थी बस मुर्दे की अर्चा ।
सद्धर्म नामपर होती थीं बस अत्याचारो की चर्चा ॥

(७)

पशु अबला निर्बल शूद्र मूकआहोसे तुझे बुलाते थे ।
उनके जीवन के क्षण क्षण भी वत्सर सम बनते जाते थे ॥
तेरे स्वागत के लिये हृदय पिघलाकर अश्रु बनाते थे ।
आँखोसे अश्रु चढाते थे आँखे पथ बीच बिछाते थे ।

(८)

तूने जब दीन पुकार सुनी सर्वस्व छोडा दौड आया ।
रोगीने सच्चा वैद्य दीनने मानो चिन्तामणि पाया ॥

तू गर्ज उठा अत्याचारों को ललकारा, सब चौंक पड़े ।
सब गूँज उठा ब्रह्मांड न रहने पाये हिंसाकांड खड़े ॥

(९)

पशुओंका तू गोपाल बना पाया सबने निज मनभाया ।
तूने फैलाया हाथ सभीपर हुई शान्त शीतल छाया ॥
फहरादी तूने विजय वैजयन्ती भगवती अहिंसाकी ।
हिंसाकी हिंसा हुई सहारा रहा नहीं उसको बाकी ॥

(१०)

सारे दुर्बन्धन तोड़फोड़ दुष्कर्मकांड सब नष्ट किया ।
भगवान सत्यके विद्रोहीगण को तूने पदभ्रष्ट किया ॥
भगवती अहिंसाका झंडा अपने हाथों से फहराया ।
तू उनका बेटा बना विश्व तब तेरे चरणों में आया ॥

(११)

ढोंगी स्वार्थी तो 'धर्म गया, हा धर्म गया' यह चिल्लाने ।
तेजस्वी रविके लिये कहे कुवचन धूर्तोंने मनमाने ॥
लेकिन तूने पर्वाह न की ढोंगों का भंडाफोड़ किया ।
सदसद्विवेक का मंत्र दिया भगवान सत्यका तंत्र दिया ॥

(१२)

तू महावीर था वर्द्धमान था और सुधारक नेता था ।
तू सर्वधर्मसमभाव विश्वमैत्रीका परम प्रणेता था ।
भगवान सत्यका बेटा था आदर्श हमारे जीवन का ।
तेरे पदचिह्न मिले मुझको वरदान यही मेरे मनका ॥

महात्मा महावीर

महात्मन्, छोड कर हमको कहाँ आसन जमाते हो ।
अहिंसा धर्मका डका बजाने क्यो न आते हो ॥१॥
तुम्हारे तीर्थ की कैसी हुई है दुर्दशा देखो ।
बने हो कर्म-योगी फिर उपेक्षा क्यो दिखाते हो ॥२॥
परस्पर द्वद होता है मचा है आज कोलाहल ।
न क्यो फिर आप समभावी मधुर वीणा बजाते हो ॥३॥
बने एकान्त के फल ये दिगम्बर और श्वेताम्बर ।
न क्यो अम्बर अनम्बर का समन्वय कर दिखाते हो ॥४॥
पुजारी रूढियो के है न है निष्पक्षता इनमे ।
इन्हे स्याद्वाद की शैली न क्यो आकर सिखाते हो ॥५॥
हुआ है जाति-मद इनको भरा मत-मोह है इनमे ।
न क्यो अब मूढता मद का वमन इनसे कराते हो ॥६॥
दुहाई ज्ञानकी देते बने पर अन्ध-विश्वासी ।
इन्हे विज्ञान की औषध न क्यो आकर पिलाते हो ॥७॥
अजब रोगी बने ये है गजब के वैद्य पर तुम हो ।
बने है आज ये मुर्दे न क्यो जिन्दे बनाते हो ॥८॥



वीर

पधारो मन-मन्दिर मे वीर !

आओ आओ त्रिशला-नन्दन,
करते है हम तेरा वन्दन,
सुनलो यह दुनियाका क्रन्दन,
शीघ्र बँधाओ धीर ।
पधारो मन-मन्दिर मे वीर ॥१॥

मानव हे यह मानव-भक्षक,
है भाई भाई का तक्षक,
हो सब ही सब ही के रक्षक,
दो ऐसी तदबीर ।
पधारो मन-मन्दिर मे वीर ॥२॥

टूट गये हे हृदय, मिला दो,
स्याद्वादामृत, नाथ ! पिला दो,
मुर्दो का ससार जिला दो,
खुल जाये तकदीर ।
पधारो मन-मन्दिर मे वीर ॥३॥

सत्य-अहिंसा पाठ पढा दो,
तपकी कुछ झाँकी दिखलादो,
बिगडो का ससार बना दो,
दूर करो दुख पीर ।
पधारो मन-मन्दिर मे वीर ॥४॥

बुद्ध

दया-देवी के नव अवतार ।

शाक्य-बन्धु पर जग का प्यारा ,
भूले भटको का ध्रुवतारा,
बुद्ध, अहिसा सत्य दुलारा,
करुणा पारवार ।
दयादेवी के नव अवतार ॥१॥

धन-वैभव का मोह छोडकर,
आशाओ का पाश तोडकर,
स्वार्थ-वासनाएँ मरोड कर,
किया जगत् मे प्यार ।
दयादेवी के नव अवतार ॥२॥

सुख दुख मे सम रहने वाला,
पर-दुख निज-सम सहने वाला,
निर्भय हो सच कहने वाला,
सत्य--ज्ञान भडार ।
दयादेवी के नव अवतार ॥३॥

करुणा से भीगा मन लेकर,
दुखियो के दुख को तन देकर,
चकराती नैया को खे कर,
करना बेडा पार ।
दयादेवी के नव अवतार ॥४॥

महात्मा बुद्ध

न तेरी करुणा का था पार ।
तू था सत्य-पुत्र तेरा था बन्धु अखिल ससार ।
न तेरी करुणा का था पार ।
निर्धन सधन और नर-नारी ।
मट विवेकी जनता मारी ।
पशु पक्षी भी मुदित किये तब औरों की क्या बात ।
किये झूठ हिंसा आदिक पापोंके घर उत्पात ॥
किया पापो का भडाफोड ।
धर्म तब आया बन्धन तोड ।
मिटा दीन, दुर्बल, मनुजो के मुख का हाहाकार
न तेरी करुणा का था पार ॥१॥
न तेरी करुणा का था पार ।
करुणाशशि ऊगा आलोकित हुआ निखिलससार । न०
अबलाएँ अञ्चल पसार कर ।
बोल उठीं आओ करुणाधर ॥
नूतन आशाओं से सबका फूला हृदयोद्यान ।
रुग्ण जगत ने पाया तुझको सच्चे वैद्य समान ॥
हुए आशान्वित सारे लोग ।
छूटने लगा अधार्मिक रोग ।
पृथ्वी उठी पुकार, पुत्र ! अब हरले मेरा भार ॥
न तेरा करुणा का था पार ॥२॥

न तेरी करुणा का था पार ।
पशु अबला निर्बल शूद्रो की तूने सुनी पुकार । न०
लाखो पशु मारे जाते थे ।
मुख मे तृण रख चिल्लाते थे ।
कोई मानव का बच्चा था देता जरा न ध्यान ।
बढती थी श्रोणित पी पीकर बस हिंसा की शान ॥
मिटाये तूने हिंसाकाण्ड ।
दयासे गूँज उठा ब्रह्माड ।
क्रन्दन मिटा सुन पडी सबको वीणा की झङ्कार ।
न तेरी करुणा का था पार ॥३॥

न तेरी करुणा था पार ।
ढा दी गई सभी दीवालें रहे न कारागार । न तेरी०
जगमे बजा साम्यका डङ्का ।
मनकी निकल गई सब शङ्का ।
दम्भ और विद्वेष न ठहरे चढा प्रेमका रङ्ग ।
बही दीनता बहा जातिमद ऐसी उठी तरङ्ग ॥
हुआ झूठो का मुँह काला ।
सत्य का हुआ बोलबाला ।
एक बार बज पडे हृदय-वीणाके सारे तार ॥
न तेरी करुणा का था पार ॥४॥



श्रमण बुद्ध

ओ बुद्ध श्रमण स्वामी तू सत्य ज्ञानवाला ।
तू सत्य का पुजारी सच्ची जबानवाला ॥१॥
हिंसा पिशाचिनी जब ताडव दिखा रही थी ।
तू मात अहिंसा का आया निशानवाला ॥२॥
विद्वान लड रहे थे उन्माद ज्ञानका था ।
बन्धुत्व प्रेम लाया तू प्रेम गानवाला ॥३॥
मुर्दा पडा जगत था सज्ज्ञान प्राण खोकर ।
तूने उसे बनाया गतिमान जानवाला ॥४॥
दुख से तपे जगत मे थी शान्ति की न छाया ।
तू कल्पवृक्ष लाया सुखकर वितान वाला ॥५॥
विष पी रहा जगत था सब भान भूल करके ।
तूने अमृत पिलाया तू अमृत पानवाला ॥६॥
मद मोह आदि हिंसक पशु का बना शिकारी ।
तूने उन्हे गिराया तू था कमान वाला ॥७॥
'है धर्म दुःख ही में' अज्ञान यह हटाया ।
अति' का विनाश कर्ता तू मध्य यानवाला ॥८॥
सब राजपाट छोडा जगके हितार्थ तूने ।
जीवन दिया जगतको तू प्राण-दानवाला ॥९॥
निःपक्षपात बन कर सन्मार्ग पा सके जग ।
दुर्ध्यान दूर करके हो सत्य ध्यानवाला ॥१०॥

महात्मा ईसा

अन्धश्रद्धाओं का था राज्य, ढोंग करते थे ताडव नृत्य ।
ईश-सेवकका रखकर वेष, बने शैतान राज्य के भृत्य ॥
मचाया था सब अन्धाधुंध, पाप करते थे परम प्रमोद ।
हुआ तब ही ईशा अवतार, मात मरियमकी चमकी गोद ॥१॥

प्रकम्पित हुआ दुष्ट शैतान, हुआ ढोंगोंका भटाफोड ।
मनुज सब बनने लगे स्वतंत्र, रूढियोंके दुर्बन्धन तोड ॥
जगत्का जागृत हुआ विवेक, सभीने पाया सच्चा ज्ञान ।
शुष्क पांडित्य हुआ बलहीन, शब्द-कीटोंने खोया मान ॥२॥

पुजारीकी पूजाएँ व्यर्थ, बनी थी मृतकतुल्य निष्प्राण ।
व्यर्थ चिल्लाते थे सब लोग, चाहते थे चिल्लाकर त्राण ॥
मिटाया तूने यह सब शोर, शांतिका दिया सभीको ज्ञान ।
'प्रार्थना करो हृदय से बंधु, न ईश्वर के है बहरे कान ॥३॥

दुःखको समझ रहे थे धर्म, झेलते थे सब निष्फल कष्ट ।
वैषियों की थी इच्छा एक, किसी भी तरह अंग हो नष्ट ॥
व्यर्थ जाता था मनुज शरीर, न था पर-सेवासे कुछ काम ।
गंदगी फैली थी सब ओर, न था सदसद्विवेकका नाम ॥४॥

तोड कर ऐसे सारे ढोंग, सिखाया तूने सेवाधर्म ।
प्रेमसे कहा-' यही है बन्धु, अहिंसा सत्यधर्मका मर्म ' ॥
रहा तू सारे झगडे छोड, रोगियोंकी सेवामें लीन ।
वेदनाओं से करके युद्ध, विश्वके लिये बना तू दीन ॥५॥

बना था तू अन्धेकी आँख, और बहिरे लोगों का कान ।
निहत्थे लोगों का था हाथ, पगुजनको था पाद-समान ॥
बालकों को था जननी-तुल्य, प्रेमकी मूर्ति अमित वात्सल्य ।
रोगियोंका था तू सद्वैद्य, दूर करदी थी सारी शल्य ॥६॥

दीन दुखियोंका करके ध्यान, न जाने कितनी गया रात ।
बिताये प्रहर एक पर एक, अश्रुवर्षा में किया प्रभात ॥
कटोरे सी जलसे परिपूर्ण, लिये अपनी ऑंखे सर्वत्र ।
दीन दुखियोंकी कुटियों बीच, सदा खोला मैत्रीका मंत्र ॥७॥

हृदय तल करके वज्र-कठोर सही तूने दुष्टोंकी मार ।
मौतसे मिटा अभय हो वीर, क्रॉसका सहकर अत्याचार ॥
आपदाओं से खेला खेल, निकाली कभी न तूने आह ।
कही तो केवल इतनी बात, ' बन्धु ! होते हो क्यों गुमराह ' ॥८॥

पढाकर मानवताका पाठ, बताई गुमराहोंको राह ।
नरकसे स्वर्ग जगत् बन जाय, यही थी तेरे मनमे चाह ॥
प्रेम, सेवा था तेरा मन्त्र, इसी के लिये दिये थे प्राण ।
हृदय मे आकर मेरे देव, विश्वका फिर करदे कल्याण ॥९॥

ईसा

दिखा दे जन-सेवा की राह।
दया चन्द्रिका को छिटकाकर,
दुखियो के दुख मन मे लाकर,
दीनो की कुटियों मे जाकर,
हरले जग का दाह।
दिखादे जन-सेवाकी राह ॥ १ ॥
धर्मालय के ढोंग मिटाने,
हृदयो मे पवित्रता लाने,
सत्य-धर्म का साज सजाने,
आजा मन के शाह।
दिखादे जन-सेवा की राह ॥२॥
बन अंधी आँखो का अञ्जन,
दीन-दुखी जन का दुखभञ्जन,
कर दे तू उनका अनुरञ्जन,
रहे न मनमे आह।
दिखादे जन-सेवाकी राह ॥३॥
सर्व-धर्म-समभाव सिखादे,
सत्य अहिंसा रूप दिखादे,
विश्वप्रेम सबके मन लादे,
रहे प्रेम की चाह।
दिखादे जन-सेवाकी राह ॥४॥

महात्मा मुहम्मद

(१)

ओ वीरवर मुहम्मद, समता सिखानेवाले ।
सत्प्रेम की जगत को, झाँकी दिखानेवाले ॥

(२)

तेरे प्रयत्न से थे, पत्थर पसीज आये ।
मरुभूमि मे सुधा की, सरिता बहानेवाले ॥

(३)

हैवानियत हटाकर, लाकर मनुष्यता को ।
बर्बर समाज को भी, सज्जन बनानेवाले ॥

(४)

होता मनुष्य-वध था, जब धर्म के बहाने ।
तब प्रेम अहिसा का सगीत गानेवाले ॥

(५)

बनकर खुदा जगत का, शैतान पुज रहा था ।
शैतान के छलो का, पर्दा हटानेवाले ॥

(६)

जग साध्य-साधनो का, जब सद्विवेक भूला ।
रिश्ता तभी खुदा से, सीधा लगानेवाले ॥

(७)

जब ब्याज बोझ बनकर, सबको सता रहा था ।
कहके हराम उसकी–हस्ती मिटानेवाले ॥

(८)

धन पाप किस तरह है, इस मर्मको समझकर ।
व्यवहार मे घटा कर, जग को दिखानेवाले ॥

(९)

अबला गरीब जन की, जो दुर्दशा हुई थी ।
उसको हटा घटा कर, सुख शाति लानेवाले ॥

(१०)

जग मे असख्य अबतक, पैगम्बरादि आये ।
उनको समान कह कर, समभाव लानेवाले ॥

(११)

मजहब सभी भले है, यदि दिल भला हमारा ।
सब धर्म प्रेम-मय है, यह गीत गानेवाले ॥

(१२)

समभाव फिर सिखाजा, सूरत जरा दिखाजा ।
फिर एक बार आजा, दुनिया हिलानेवाले ॥



मुहम्मद

(१)

था अजब बना बाना तेरा, तलवार इधर थी, उधर दया ।
जल-लहरी की मालाएँ थी, ज्वालाएँ थी, था रूप नया ॥
दुर्जन-दल भञ्जक था पर तू , जगका अनुरञ्जक प्रेम-सना ।
भीतर से था सच्चा फकीर, ऊपर से था पर शाह बना ॥

(२)

था माल खजाना तेरा पर, कोडी कौडी का त्याग किया ।
मालिक था, गुरु था, पर तूने, सेवकता का सन्मान लिया ॥
विपदाओ के अगणित कंटक थे, तूने उनको धास दिया ।
तू मौत हथेली पर लेकर, भूली दुनियाके लिये जिया ॥

(३)

नर-रत्न मुहम्मद, सीखी थी, तूने मरने की अजब कला ।
तू वाइज था, पैगम्बर था, तूने दुनिया का किया भला ॥
अभिमान छुडाया था तूने, सबके मजहब को भला कहा ।
तू सर्वधर्मसमभाव लिये, भगवान सत्यका दूत रहा ॥

(४)

दिखलादे तू अपनी झाँकी, दुनिया मे कुछ ईमान रहे ।
सत्प्रेम रहे मानव मन में, भाईचारे का ध्यान रहे ॥
मजहब के झगडे दूर हटे, मजहब मे सच्ची जान रहे ।
सब प्रेम-पुजारी बने अहिंसक, जिससे तेरी शान रहे ॥

मनुष्यता का गान

आओ मनुष्य बनजावे गावें मनुष्यता का गान ।
हम भूले गोरा काला ।
जग हो न रग-मतवाला ।
हम पिये प्रेम का प्याला ॥
हम देखे मनका रग और मुखके ऊपर मुसकान ।
आओ मनुष्य बनजावे गावे मनुष्यता का गान ॥१॥
हम जाति पाँति सब तोडे ।
हम सब से नाता जोडें ।
हम मत-मदान्धता छोडें ॥
हों हिन्दू अथवा मुसलमान सबका हो एक निशान ।
आओ मनुष्य बनजावें गावे मनुष्यता का गान ॥२॥
हमने मानव तन पाया ।
पर मानवपन न दिखाया ।
औदार्य विवेक गमाया ।
हम मनुष्यता के बिना बने पडित, कैसे नादान ।
आओ मनुष्य बनजावे गावे मनुष्यता का गान ॥३॥
हो सारा विश्व हमारा ।
सबसे हो भाईचारा ।
हो हृदय न न्यारा न्यारा ॥
हम चलें प्रेम के पंथ प्रेमका हो घर घर सन्मान ।
आओ मनुष्य बनजावे गावें मनुष्यता का गान ॥४॥

जागरण

सोनेवाले अब जाग जाग ।
उदयाचल पर आये दिनेश-अणु अणु पर छाया किरण-राग ॥
सोने वाले अब जाग जाग ॥१॥
निशि गई गया अब तमस्तोम,
फैला है भूतल पर प्रकाश ।
आंखो की उलझन हुई दूर,
हो रहा जगत का भ्रम-विनाश ॥
दिख रहा कुपथ पथ का विभाग ।
सोनेवाले अब जाग जाग ॥२॥
जग की जडता होगई नष्ट,
मचरहा यहा सब ओर शोर ।
है हुआ भोर भग रहे चोर,
कल कल करते कलकण्ठ मोर ॥
दिख रहे मनोहर विपिन बाग ।
सोनेवाले अब जाग जाग ॥३॥
अब खोल नयन करले विचार ,
कर्तव्य पथ दिखता अपार ।
ढोना है तुझको अमित भार,
जब है दिनमे बस प्रहर चार ॥
जडता की शय्या त्याग त्याग ।
सोने वाले अब जाग जाग ॥४॥

नई दुनिया

दुनिया अब नई बनाना ।
यह जग हो गया पुराना ॥
फैला है इसमे रूढिजाल ।
दुर्जन रूपी है विकट व्याल ।
वचक चलते हैं कुटिल चाल ।
सज्जन होते बेहाल हाल ॥
पर हमको स्वर्ग दिखाना । दुनिया अब० ॥१॥
रोका जाता इसमे विकास ।
है व्यक्ति पा रहा व्यर्थ त्रास ।
बनता कायरता का निवास ।
विद्वेष घृणा है आसपास ॥
हमको है प्रेम बढाना । दुनिया अब० ॥२॥
यद्यपि है मानव एक जाति ।
पर घर घर मे है जाति पॉति ।
भाई का भाई है अराति ।
जो था अघाति बन गया घाति ॥
सबको है हमे मिलाना ।दुनिया अब० ॥३॥
नारी है अब अधिकार-हीन ।
है पशु समान अतिहीन दीन ।
मानवता पशुता के अधीन ।

पशुबल मे है सब न्याय लीन ॥
है यह अन्धेर मिटाना । दुनिया अब० ॥४॥

गोमुखव्याघ्रो की है कुटेक ।
पिसते समाजसेवी अनेक ।
है यहा अन्धश्रद्धातिरेक ।
कोसा जाता डटकर विवेक ॥
हमको विवेक फैलाना । दुनिया अब० ॥५॥

लडते आपस मे सम्प्रदाय ।
हैं एक-प्राण पर भिन्न-काय ।
करते है भाई का अपाय ।
व्यय बढा और घट रही आय ॥
सममाव हमे बतलाना । दुनिया अब० ॥६॥

मदिर मसजिद गिरजे अनेक ।
मिलकर हो जाये एकमेक ।
छोडे अपनी अपनी कुटेक ।
जग जाये जनता का विवेक ॥
कोई भी हो न विराना । दुनिया अब० ॥७॥

सौभाग्य सूर्य हो उदित आज ।
दे हमे सत्य भगवान ताज ।
भगवती अहिंसा का स्वराज ॥
सुखमय स्वतन्त्र हो सब समाज ।
सबका हो एक ठिकाना । दुनिया अब० ॥८॥

मेरी कहानी

[१]

सुनता मेरी कौन कहानी ।
दीवाना कहती है मुझको यह दुनिया दीवानी ॥
सुनता मेरी कौन कहानी ॥

[२]

रस रस की बतियाँ न यहा है और न रूठी रानी ।
सूख गईं अखियाँ बह बह कर सूखा उनका पानी ।
सुनता मेरी कौन कहानी ॥

[३ [

है कर्तव्य कठोर बना है बालक मन भी ज्ञानी ।
दुनिया ऊँघे अथवा थूँके कर लूगा मनमानी ॥
सुनता मेरी कौन कहानी ॥

[४]

किसे सुनाऊ गाल बजा कर दुनिया हुई पुरानी ।
नई बनेगी ऐसी दुनिया होगी परम सयानी ॥
सुनता मेरी कौन कहानी ॥

[५]

छोड चलूगा झूठी दुनिया अपनी हो कि बिरानी ।
मै ही श्रोता रहू मगर अब सच कहने की ठानी ॥
सुनता मेरी कौन कहानी ॥

क़ब्रके फूल

क़ब्र पर आज चढाये फूल ।
जबतक जीवन था तबतक क्षणभर न रहे अनुकूल । क़ब्र पर ॥१॥
कणकणको तरसाया क्षणक्षण मिला न अणुभर प्यार ।
अब आँखोसे बरसाते हो, मुक्ताओ की धार ॥
देह जब आज बनी है धूल ।
क़ब्र पर आज चढाये फूल ॥२॥
आज धूल भी अजन सी है, नयनो का शृङ्गार ।
काला ही काला दिखता था, तब हीरे का हार ॥
कल्पतरु भी था तब बबूल ।
क़ब्र पर आज चढाये फूल ॥३॥
विस्मृति के सागर मे मेरी, डुबा रहे थे याद ।
नाम न लेते थे, कहते थे, हो न समय बर्बाद ॥
मगर अब गये भूलना भूल ।
क़ब्र पर आज चढाये फूल ॥४॥
सदा तुम्हारे लिये किया था, वन-जीवन का त्याग ।
सीच सीच करके अँसुओसे, हरा किया था बाग ॥
मगर तब हुए फूल भी शूल ।
क़ब्र पर आज चढाये फूल ॥५॥
अब न क़ब्र मे आ सकती है, इन फूलो की बास ।
मुझे शाति देता है केवल, यही क़ब्र का घास ॥
शान्त रहने दो जाओ भूल ।
क़ब्र पर आज चढाये फूल ॥

भुलक्कड़

(१)

भुलक्कड ! फिर भूला तू आज ।
कुपथ और पथका न ठिकाना ।
शत्रु-मित्रका भेद न जाना ।
विषको अमृत, अमृत विष माना ॥
बन कर पागलराज ।
भुलक्कड, फिर भूला तू आज ॥

(२)

परिवर्तन से डरता है तू ।
पर परिवर्तन करता है तू ।
चलता नहीं घिसडता है तू ॥
जब छिन जाता ताज ।
भुलक्कड, फिर भूला तू आज ॥

(३)

अहङ्कार ने राज्य जमाया ।
और अन्ध-विश्वास समाया ॥
मिली चापलूसों की माया ॥
हुई कोढ में खाज ।
भुलक्कड, फिर भूला तू आज ॥

(४)

तुझे सत्य सन्मान नहीं है ।
अथवा तुझमे ज्ञान नहीं है ।
तुझको इसका भान नहीं है—
गिरती सिर पर गाज ।
भुलक्कड, फिर भूला तू आज ॥

(५)

कोरी कट कट से क्या होगा ?
धन के जमघट से क्या होगा ?
घूँघट के पट से क्या होगा ?
जब न हृदय मे लाज ।
भुलक्कड, फिर भूला तू आज ॥

(६)

फॉसी पर जिनको लटकाया ।
या निन्दा का पात्र बनाया ।
फिर उनके पूजन को आया ॥
ले पूजा के साज ।
भुलक्कड, फिर भूला तू आज ॥

(७)

तुझे सत्य का रूप दिखाने ।
प्रेम और समभाव सिखाने ।
फिर जीवित समाज मे लाने ॥
आया सत्य-समाज ।
भुलक्कड, फिर भूला तू आज ॥

मिटनेका त्यौहार

(१)

मिटने का त्यौहार ।
सखी, यह मिटने का त्यौहार ।
मन देना है, तन देना है,
गिनगिनकर सब धन देना है,
वैभवमय जीवन देना है,
फिर देना है प्यार ।
सखी, यह मिटने का त्यौहार ॥

[२]

क्या लाये थे? क्या लेजाना?
सब दे जाना, शोक न लाना,
पिसने को मेँहदी बन जाना,
लालीका भंडार ।
सखी, यह मिटने का त्यौहार ॥

[३]

मानव-तुल्य स्वतंत्र रहेंगे,
मौन भले हो, सत्य कहेंगे,
हँसते हँसते सदा सहेंगे,
गाली की बौछार ।
सखी, यह मिटने का त्यौहार ॥

[४]

मुख ऊपर मुसकान रहेगी,
और फकीरी शान रहेगी,
नग्न सत्य की आन रहेगी,
सेवामय ससार ।
सखी, यह मिटने का त्यौहार ॥

[५]

मिट्टीमे मिल जाना होगा,
अपना रूप मिटाना होगा,
मिटकर वृक्ष बनाना होगा,
होगा बेडा पार ।
सखी, यह मिटने का त्यौहार ॥

[६]

देना है जीवनका कणकण,
यदि करना हो मिटने का प्रण,
तो भेजा है आज निमन्त्रण,
कर लेना स्वीकार ।
सखी, यह मिटने का त्यौहार ॥



समाज सेवक

(१)

अपनी विपदा किसे सुनाऊँ ?
रोनेका अधिकार नही है, कैसे अश्रु बहाऊँ ?
अपनी विपदा किसे सुनाऊँ ॥

(२)

रुकी हुई वेदना हृदय मे, आँखो से बहने को—
तरस रही है, तडप रहा है, हृदय दु ख कहने को ।
पर मै कहाँ सुनाने जाऊँ ?
अपनी विपदा किसे सुनाऊँ ॥

(३)

दिखलाता है क्षितिज किन्तु पथका न अन्त दिखलाता ।
चलना है, निशिदिन चलना है, है न क्षणिक भी साता ॥
कैसे अपना मन बहलाऊँ ?
अपनी विपदा किसे सुनाऊँ ॥

(४)

अपने तनसे अधिक सीस पर भारी बोझ लदा है ।
है न सहारा कोई उस पर विपदा पर विपदा है ॥
बोलो, कैसे पैर बढ़ाऊँ ?
अपनी विपदा किसे सुनाऊँ ॥

(५)

कटकमय है मार्ग सब तरफ, श्वापद है गुर्राते ।
जिनके लिये मर रहा हूँ मैं वे ही हैं ठुकराते ॥
मन मे धैर्य कहाँ तक लाऊँ ?
अपनी विपदा किसे सुनाऊँ ॥

(६)

लुटादिया सर्वस्व, बना हू जगके लिये भिखारी ।
अब तो लक्ष्मी को तलाक देने की आई बारी ॥
किसको अपनी दशा दिखाऊँ ?
अपनी विपदा किसे सुनाऊँ ॥

(७)

भीतर ज्वालाएँ जलती है, उनमे ही बसना है ।
छनकाना है अश्रु वही पर, फिर मुख पर हँसना है ॥
अपनी हँसी किसे समझाऊँ ?
अपनी विपदा किसे सुनाऊँ ॥

(८)

विपदाओ ! आओ ! आओ !! करलो अपने करने की ।
अब तो एक साधना ही है, हँस हँस कर मरने की ॥
मरकर विश्वरूप हो जाऊँ ।
अपनी विपदा किसे सुनाऊँ ॥



ठिकाना

ठिकाना पूछते हो क्या ? हमारा क्या ठिकाना है !
मिले जो झोपडी आगे, निशा उसमे बिताना है ॥
ठिकाना पूछते हो क्या० ॥१॥
अमीरीमे न था हँसना, गरीबी मे न है रोना ।
जगत् चलता, चलेंगे हम, हमें क्या घर बसाना है ॥
ठिकाना पूछते हो क्या० ॥२॥
पडा कर्तव्यका पथ है, भला विश्राम क्या होगा ?
न सोना है न रोना है, हमे चलकर दिखाना है ॥
ठिकाना पूछते हो क्या० ॥३॥
बिदाई स्वार्थ को दी फिर, हमारा क्या तुम्हारा क्या ?
जमी औ आसमाँ सारा, सदन हमको बनाना है ॥
ठिकाना पूछते हो क्या० ॥४॥
जिसे तुम घर समझते हो, वही तुमको मुबारिक हो ।
हमारा क्या, हमे जगसे सदा नाता लगाना है ॥
ठिकाना पूछते हो क्या० ॥५॥
करोडो मर्द है भाई, करोडो नारियाँ बहिने ।
फ़कीरी है मगर हमको, कुटुम्बी भी कहाना है ॥
ठिकाना पूछते हो क्या० ॥६॥
भले हो अग पर चिथडे, लँगोटी भी न साजी हो ।
हमे तो शीलसे अपना, सदा जीवन सजाना है ॥
ठिकाना पूछते हो क्या० ॥७॥

न कुछ भी संग लाये थे, चलेगा संगमें भी क्या।
पड़ा रह जायगा यों ही, न आना है न जाना है।
ठिकाना पूछते हो क्या० ॥८॥
प्रलोभन क्या लुभावेगा ? करेगी चोट क्या विपदा ?
जगह वह छोड़ दी हमने, जहाँ उनका निशाना है ॥
ठिकाना पूछते हो क्या० ॥९॥
न साढे तीन हाथों से, अधिक कोई जगह पाता।
पसारे हाथ कितने ही, मगर क्या हाथ आना है ?
ठिकाना पूछते हो क्या० ॥१०॥
करेंगे दीन की सेवा, बनेंगे विश्व-सेवक हम।
दुखीजनके कटे दिलपर, हमें मरहम लगाना है ॥
ठिकाना पूछते हो क्या० ॥११॥
करेंगी रूढ़ियाँ तांडव अहंकारी सतावेंगे।
मगर उनके प्रहारों को, हमें मिट्टी बनाना है ॥
ठिकाना पूछते हो क्या० ॥१२॥
बने जो मित्रजन कातिल, हमें पर्वा न है उनकी।
हमारी यह तमन्ना है, कि अपना सिर कटाना है ॥
ठिकाना पूछते हो क्या० ॥१३॥
न दुश्मन अब रहा कोई, हमारे दोस्त हैं सब ही।
सभी के प्रेममय मन पर, हमें कुटिया बनाना है ॥
ठिकाना पूछते हो क्या० ॥१४॥



मँझधार

नौका पहुँची है मँझधार ।
हूँ खेवटिया, डॉड नही है, टूटी है पतवार ।
नौका पहुँची है मँझधार ॥१॥
इधर किनारा उधर किनारा, पर दोनो ही दूर ।
बीच बीचमे चट्टाने है, हो नौका चकचूर ॥
कैसे होगा बेडा पार ।
नौका पहुँची है मँझधार ॥२॥
मगर मच्छ चहुँओर भरे है, यदि हो थोडी भूल ।
उलट पुलट तब सब हो जावे रहे न चुटकी धूल ॥
उसपर दुनिया कहे गमार ।
नौका पहुँची है मँझधार ॥३॥
वैभव की कुछ चाह नही है और न यम से भीति ।
केवल भीख यही है मेरी रहे तुम्हारी प्रीति ॥
दुख मे करूँ न हाहाकार ।
नौका पहुँची है मँझधार ॥ ॥४॥
डूब न जाये मेरे यात्री करना उनका त्राण ।
जलदेवी को बलि देदूँगा मैं अपने ही प्राण ॥
मेरे यात्री पहुँचे पार ।
नौका पहुँची है मँझधार ॥५॥



उसके प्रति

(१)

बुझादे, मेरी ज्वालाएँ ।

नागिनकी लपलपी जीभ-सी ज्वाला-मालाएँ ।

बुझादे, मेरी ज्वालाएँ ॥

(२)

दुनिया देख न सकती स्वामी ।

समझ रहा तू अतर्यामी ।

अनल देव की किस प्रकार लिपटी ये बालाएँ, ॥

बुझादे मेरी ज्वालाएँ ॥

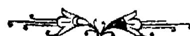
(३)

अपनी व्यथा अवश्य सहूँगा ।

दुख मे हँसता हुआ रहूँगा ।

जलकर भी आबाद करूँगा, तेरी शालाएँ ।

बुझादे, मेरी ज्वालाएँ ॥



झरना

(१)

बहादे छोटा सा झरना ॥
प्यासा होकर सोच रहा हू कैसे क्या करना ?
बहादे छोटा सा झरना ॥

(२)

मरु-थल चारो ओर पडा है,
बालू का ससार खडा है।
बूँद बूँद की दुर्लभता मे, कैसे रस भरना ?
बहादे, छोटा सा झरना ॥

(३)

नयन-नीर वरसाना होगा,
मानस को भर जाना होगा,
शीतल मद सुगध पवन से जगत्ताप हरना,
बहादे, छोटासा झरना ॥

(४)

मेरी थोडी प्यास बुझादे,
छोटासा ही झरना लादे।
चमन बना दूगा इस मरु को भले पडे मरना,
बहादे छोटासा झरना ॥



प्यास

(१)

तूही मेरी प्यास बुझादे ।
अधिक नही तो एक बूँद ही इस मुख मे टपकादे ।
तूही मेरी प्यास बुझादे ।

(२)

भूतल मे जल है पर मेरे काम नही वह आता ।
गली गली का मैल वहा है मुख न उसे छूपाता ॥
मुखपर निर्मल जल बरसादे ।
तूही मेरी प्यास बुझादे ॥

(३)

"पानी मे भी मीन पियासी सुनकर आवे हाँसी"
पर तू मर्म समझता स्वामी, तू घट घट का वासी ॥
आकर निर्मल नीर पिलादे ।
तू ही मेरी प्यास बुझादे ॥

(४)

चातक तुल्य रहूँगा प्यासा जान भले ही जावे,
पर न अशुद्ध नीरका कण भी इस मुखमे आपावे ॥
मेरा यह प्रण पूर्ण करादे ।
तू ही मेरी प्यास बुझादे ॥



आशा का तार

अमर रह रे आशाके तार ।
तू टूटा तो दुनिया टूटी डूबा जग मँझधार ॥
अमर रह रे आशाके तार ॥ १ ॥

अटके रहते है तेरे मे सारे जगके प्राण ।
घोर विपत मे भी करता है तू ही सब का त्राण ॥
न होने देता जीवन भार ।
अमर रह रे आशाके तार ॥२॥

निर्धन सधन महात्मा योगी सबको तेरी चाह ।
तमस्तोममे भी दिखलाता रहता है तू राह ॥
साधनो का है तू ही सार ।
अमर रह रे आशाके तार॥ ३ ॥

धन भी जावे जन भी जावे बन जाऊ असहाय ।
तू न टूटना, भले सभी कुछ टूटे जग बह जाय ॥
निराशा है जीवन की हार ।
अमर रह रे आशाके तार ॥ ४ ॥

विपत विरोध उपेक्षा मिलकर करना चाहे चूर ।
तबतक क्या कर सकते जब तक तू है जीवनमूर ॥
विजय का तू अनुपम आधार ।
अमर रह रे आशाके तार ॥ ५ ॥

क्या करूं ?

अगर सफलता पा न सकू तो, दुनिया कहती है नादान,
विजयी बनू सफलता पाऊ, तो कहती है धूर्त महान ॥ १ ॥
निंदक भ्रष्ट विरोधी जनको, क्षमा करू कहती कमजोर'
इनको अगर ठिकाने लाऊ, तो कहती 'निष्करुण कठोर' ॥२॥
अगर कष्ट कुछ सहन करू तो, कहती है 'फैलाता नाम'
बचा रहू यदि व्यर्थ कष्टसे, कहती है 'करता आराम' ॥३॥
दान करू तो कहने लगती, 'था कैसा यह सग्रह-शील,
मुँह देखी बाते करता था, करता था सत्पथमे ढील ॥४॥
दान न करू बोलती दुनिया, देता है झूठा उपदेश,
त्याग सिखाता दुनिया भरको, अपने मे न त्यागका लेश' ॥५॥
अगर फकीर बनू तो कहती, 'पेट-पूर्ति का खोला द्वार,
दुनिया से धक्के खाकर अब, बन बैठा सेवक लाचार' ॥६॥
अगर रहू धन से स्वतन्त्र मै, कहती है 'भरकर निज पेट,
त्याग त्याग चिल्लाता रहता, करता भोलो का आखेट' ॥७॥
अगर प्रेम से बात करू तो, कहती 'कैसा मायाचार'।
अगर उपेक्षा करू जगत से, तो कहती 'मदका अवतार'॥८॥
अगर युक्तियो से समझाऊ, कहती 'युक्ति तर्क है व्यर्थ,
सत्य प्राप्त करने मे कैसे, हो सकती है युक्ति समर्थ' ॥९॥

अगर भावना ही बतलाऊ, कहती 'कैसा खुदमुख्तार।
बिना युक्ति के पागल जैसे, सुन सकता है कौन विचार' ॥१०॥
यदि सबका मै करू समन्वय, कहती है 'कैसा बकवाद।
एक बात का नहीं ठिकाना, देता है खिचडी का स्वाद' ॥११॥
एक बात दृढता से बोलू, कहती 'ढीठ और मुँहजोर,
सुनता है न किसी की बाते, मचा रहा अपना ही शोर' ॥१२॥
सोचा बहुत करू क्या जिससे, हो इस दुनिया को सतोष,
सेवा यह स्वीकार करे या नही करे पर करे न रोष ॥१३॥
सोचा बहुत नहीं पाया पथ, समझा यह सब है बेकार,
दुनिया को खुश करने का है यत्न मूर्खता का आगार ॥१४॥
अरे जन्तु, खुदको प्रसन्न कर, जिससे हो प्रसन्न सत्येश।
बकती है दुनिया बकने दे, ढककर रख तू कान हमेश ॥१५॥
सज्जन-दुर्जन-मय दुनिया मे, होगे कुछ सज्जन धीमान।
आज नहीं तो कल समझेगे, तेरा ध्येय और ईमान ॥१६॥
अपरिमेय ससार पडा है, अपरिमेय आवगा काल।
उसमे कही मिलेगा कोई, जो समझेगा तेरा हाल ॥१७॥
चिंता की कुछ बात नहीं है कर्मयोग से करले कर्म।
दुनिया खुश हो या नाखुश हो, होगा तेरा पूरा धर्म ॥१८॥
सच्चा यश रहता है मनमें, दुनिया की तब क्या पर्वाह।
दुनिया का यश छाया सम है, देख नहीं तू उसकी राह ॥१९॥
सत्य अहिंसाके चरणो में, करदे तू अपना उत्सर्ग,
तब तेरी मुट्ठी मे होगा, सारा सुयश स्वर्ग अपवर्ग ॥२०॥

मेरी चाल

[१]

कौन रोकेगा मेरी चाल ।
गर्दन कटे चलेगा धड़भी, चमक उठेगा काल ॥
कौन रोकेगा मेरी चाल ॥

[२]

विपदाएँ आवेगी पथ मे, होगी चकनाचूर ।
तन लेगी पर मनको होगा, छूसकना भी दूर ॥
करूँगा उन्हे हाल बेहाल ।
कौन रोकेगा मेरी चाल ॥

[३]

अगर प्रलोभन भी आवेग, दूगा मै दुतकार ।
कर दूगा मै एक एक पर, शत-शत पाद-प्रहार ॥
तोड दूगा मै उनका जाल ।
कौन रोकेगा मेरी चाल ॥

[४]

अगर अध-श्रद्धा आवेगी, दूगा दड प्रचण्ड ।
कर दूगा मै तोड फोड कर, खड खड पाखड ॥
बनेगा सद्विवेक ही ढाल ।
कौन रोकेगा मेरी चाल ॥

[५]

अभ्रकश गिरि-श्रृंग और पथ का बीहड बन घोर ।
मुझको डरा नहीं सकता, मै निर्भय चारो ओर ॥
खिलाऊगा मैं हॅसकर व्याल ।
कोन रोकेगा मेरी चाल ॥

[६]

शत्रु, मित्र का रूप बनाकर अगर करे आघात ।
सहलूगा निश्चिन्त करूगा हॅसकर उनसे बात ॥
विरोधी भले बजावे गाल ।
कोन रोकेगा मेरी चाल ॥

[७]

सत्येश्वर भगवती अहिसा है मेरे आधार ।
उनके वरद हस्त के नीचे मेरा बेडा पार ॥
सम्हालेगे वे अपना बाल ।
कोन रोकेगा मेरी चाल ॥

[८]

मुझ निर्बल के बल है वे ही वे ही पितर महान ।
मुझ गरीब के धन हैं वे ही भक्तो के भगवान ॥
तोड देगे वे ही जजाल ।
कौन रोकेगा मेरी चाल ॥



उलहना

कोमल मन देना ही था तो,
　　क्यों इतना चैतन्य दिया ।
शिशु पर भूषण-भार लादकर,
　　क्यों यह निर्दय प्यार किया ॥ १ ॥
यदि देते जड़ता, जगके दुख
　　हानि नहीं कुछ कर पाते ।
त्रिविध-ताप से पीड़ित करके,
　　मेरी शान्ति न हर पाते ॥ २ ॥
जड़ता मे क्या शान्ति न होती,
　　अच्छा था जड़ता पाता ।
किसका लेना किसका देना,
　　वीतराग सा बन जाता ॥ ३ ॥
अपयश का भय कर्तव्यों की—
　　रहती फिर कुछ चाह नहीं ।
तुम सुख देते या दुख देते,
　　होती कुछ पर्वाह नहीं ॥ ४ ॥

लडते लोग धर्म के मद से,
मेरा क्या आता जाता ।
दुखियो की आहो से भी यह,
हृदय नहीं जलने पाता ॥ ५ ॥
विधवाओ के अश्रु न मेरी,
नजरो मे आने पाते ।
नही आँसुओ की धारा मे,
ये कपोल धोये जाते ॥ ६ ॥
हाय हाय चिल्लाता जग पर,
होते कान न भारी ये ।
नहीं सुखाती नहीं जलाती,
चिन्ता की चिनगारी ये ॥ ७ ॥
जड होकर जड के पूजन मे,
निजपर सब भूला रहता ।
दुनिया के दुख की चिन्ता का--
बोझ हृदय पर क्यो सहता ॥ ८ ॥
पर जो हुआ हो गया, अब क्या ?
अब तो इतना ही कर दो ।
मन को वज्र बना दो उस मे,
साहस और धैर्य भर दो ॥ ९ ॥
'रोना' तो मैं सीख चुका हूँ ।
अब कुछ 'करना' सिखला दो ॥
इस कर्तव्य यज्ञ मे बढकर--
हँस हँस मरना सिखला दो ॥ १० ॥

विधवा के आँसू

अब इन अँसुओ का क्या मोल ?
बेशर्मी से भिगा रहे है ये निर्लज्ज कपोल ।
अब इन अँसुओ का क्या मोल ॥ १ ॥
उस दिन थे मोती से जब था सोने का समार ।
इन पर न्योछावर होता था कभी किसीका प्यार ॥
झडते थे फूलो से बोल ।
अब इन अँसुओ का क्या मोल ॥ २ ॥
गगा यमुना सी बहती है इन आँखो से धार ।
प्रेम-पुजारी गया, यहाँ जो लेता गोता मार ॥
अब खोर जल की कल्लोल ।
अब इन अँसुओ का क्या मोल ॥ ३ ॥
आपाते ये कभी न नीचे जो अचल की ओर ।
आज भिगाते है वे भूतल, बन वर्षा घनघोर ॥
बन बन गली गली मे डोल ।
अब इन अँसुओ का क्या मोल ॥ ४ ॥
सारा जग अधा बन बैठा मानो आँखे फोड ।
देख न सकता बहा रही क्या हृदय निचोड निचोड ॥
निर्दय ! अब तो आँखे खोल ।
अब इन अँसुओ का क्या मोल ॥ ५ ॥

कोई मुझे अभागिन कहता, कहता कोई राँड ।
सास ननँद कहने लगतीं हैं, 'बन बैठी है साँड ॥
निशि दिन सुनती बोल कुबोल ।
अब इन अँसुओ का क्या मोल ॥ ६ ॥

अब न शीलकी भी इज्जत है आया गुंडा-राज ।
घर घर मे हे चर्चा मेरी गली गली आवाज ॥
बजता है निंदा का ढोल ।
अब इन अँसुओ का क्या मोल ॥ ७ ॥

कोने मे बैठी रहती हूँ सब की सीखे सीख ।
रूखा टुकडा मिल जाता ज्यो मिली कहीं से भीख ॥
जब सब करते मौज किलोल ।
अब इन अँसुओ का क्या मोल ॥ ८ ॥

धधक रही है भीतर भट्टी ऊपर अश्रु-प्रवाह ।
अरमानो को जला जलाकर बना रही हूँ 'आह'
देखो भीतर के पट खोल ।
अब इन अँसुओ का क्या मोल ॥ ९ ॥

मुर्दे जलकर फूल कहाते पर मै जीवित धूल ।
सबके निकट मौत रहती पर मुझे गई वह भूल ॥
आजा तू ही मुझ से बोल ।
अब इन अँसुओं का क्या मोल ॥ १०॥



चिता

ज्वालाओं का जाल बिछा है, है पर शान्ति-निकेतन ।
जलतीं हैं चिताएँ सारीं, शान्त यहा है तन मन ॥१॥
अब न मित्र का मोह यहा है, है न शत्रु का भी भय ।
हू न किसीपर सदय-हृदय अब हू न किसीपर निर्दय ॥२॥
जीवन मे क्षणभर भी ऐसी नींद नही ले पाया ।
सोता था मै नचता था मन, माया मे भरमाया ॥३॥
'इसका लेना उसका देना, यह मेरा वह तेरा' ।
करता था, पर रहा न कुछ अब, लगा चिता पर डेरा ॥४॥
फूलो की शय्या पर सोया बन जोटा दिल तोटा ।
भूला रहा काठकी शय्या, चार जनो का घोडा ॥५॥
इसे हराया उसे हराया बना रहा अभिमानी ।
पर यह जीवन हार रहा था, सीधी बात न जानी ॥६॥
इसका लूटा उसका खाया, अति लालचके मारे ।
लेकिन हाथ न कुछ भी आया, जाता हाथ पसारे ॥७॥
मानव का कर्तव्य भुलाया योंही दिवस बिताये ।
बहती थी गगा पर मैंने हाथ नही धोपाये ॥८॥
खेला भद्दा खेल, खेल का मजा न कुछ भी आया ।
सूत्रधार यमराज अचानक आया खेल मिटाया ॥ ९ ॥
चला, साथ पर चला न कुछ भी, साथ न था कुछ लाया ।
उस मिट्टीमे ही जाता हू, जिस मिट्टी से आया ॥ १० ॥

माया

जगकी कैसी है यह माया ।
जिसने जीवन भर भरमाया ॥

(१)

निशिदिन जाप जपा ईश्वरका पर न हृदय में आया ।
धोखा देने चला उसे पर मैंने धोखा खाया ॥
जगकी कैसी है यह माया ॥

(२)

था जीवनका खेल मगर मैं खेल न दिखला पाया ।
खेल खेलने गया मगर मैं रो रो कर भग आया ।
जगकी कैसी है यह माया ॥

(३)

सदा हृदय मे गूजा 'मैं मै' 'मै मै' काम न आया ।
माया ओझल हुई मिटा सब अपना और पराया ॥
जगकी कैसी है यह माया ॥

(४)

मुट्ठीमें लेने को दौडा दिखती थी जो छाया ।
पर वह छाया हाथ न आई मूरख ही कहलाया ॥
जगकी कैसी है यह माया ॥

(५)

माया को सत्येश्वर समझा सत्येश्वर को माया ।
इसीलिये कुछ हाथ न आया जीवन व्यर्थ गमाया ॥
जगकी कैसी है यह माया ॥

जीवन

जीवन का कौन ठिकाना ।
जो अपना कर्तव्य उसी पर, न्यौछावर होजाना ।
जीवनका कौन ठिकाना ॥ १ ॥
बनो आलसी तो जाना है, कर्म करो तो जाना ।
फिर क्यो स्वार्थी और आलसी बनकर मृतक कहाना ।
जीवनका कौन ठिकाना ॥ २ ॥
यौवन पाया धन जन पाया, सभी वृथा है पाना ।
अगर नहीं दुनियाके हितमे, अपना हित पहचाना ॥
जीवनका कौन ठिकाना ॥ ३ ॥
क्या लाये थे क्या लेजाना, खाली आना जाना ।
यहीं रहा सब यही रहेगा, क्यो फिर मोह लगाना ॥
जीवनका कौन ठिकाना ॥ ४ ॥
आवेगा जब काल तभी यह, सब कुछ है छिनजाना ।
क्यो न जगत के सेवक बनकर, त्यागवीर कहलाना ॥
जीवन का कौन ठिकाना ॥ ५ ॥
अभिमानी बन गजपर बैठो, सीखो जोर जताना ।
याद रहे पर एक दिवस है, मिट्टी मे मिलजाना ॥
जीवनका कौन ठिकाना ॥ ६ ॥
खेलो खेल खिलाडी बनकर छोडो वैर भजाना ।
अपना अपना खेल खेलकर हँसकर छोडो बाना ॥
जीवनका कौन ठिकाना ॥ ७ ॥

दुविधा का अंत

पथमे कटक बिछे, पडी है गहरी खाई ।
खो बैठा सर्वस्व बची एक भी न पाई ॥
विपदाओ की घटा उमडती ही आती है ।
बिजली भी यह कडक कडक मन धडकाती है ॥
अन्धकार घनघोर है हुआ एक सा रात दिन ।
पीछे भी पथ है नही आगे बढना है कठिन ॥१॥
कैसे आगे बढू यही क्या पडा रहू मै ।
पडा पडा सड मरू कीच मे गडा रहू मै ॥
हृदय हुआ है खिन्न भरी उसमे दुविधा है ।
चारो ओर विपत्ति नही कोई सुविधा है ॥
मरना है जब हर तरह क्यो न कदम आगे धरू ।
पडा पड़ा या पिछड कर कायर बनकर क्यो मरू ॥

चाह

हरगिज दिलमे यह चाह नहीं, मुझपर न मुसीबत आने दो ।
मै चलूँ जहाँ पर वहीं उन्हे विघ्नोका जाल बिछाने दो ॥
यदि डरवाते भयभूत खडे पर्वाह नहीं डरवाने दो ।
पथमे यदि कटक बिछे हुए पदमे गडते गडजाने दो ॥
बस, मुझे चाहिये ऐसा दिल जिसमें कायरता लेश न हो ।
समभाव धैर्य साहस के बलपर विपदासे भी क्लेश न हो ॥
यदि ऐसा दिल मिलगया मुझे तो पथकटक पिस जायेगे ।
विपदा के भयके भूतोंके विघ्नोके दिल घबरायेगे ॥

शृंगार

करूँगी सखि, मै अपना शृगार ॥
सोना न होगा, न चॉदी भी होगी,
होगा न हीरे का हार ॥
करूँगी साखि मै अपना शृगार ॥१॥
काजल न होगा, न ताम्बूल होगा,
होगा न रेशम का भार ।
महॅदी न होगी, न उबटन भी होगा,
होगी न गोटा–किनार ॥
करूगी साखि, मै अपना शृगार ॥२॥
होगा न कङ्कण, न होगी अँगूठी,
होगे न मोती अपार ।
चम्पा न होगा, चमेली न होगी,
होगी न बेला–बहार ॥
करूँगी सखि, मै अपना शृगार ॥३॥
खञ्जनसी ऑखो मे, अजन लगानेको,
जाऊँगी मरघट के द्वार ।
ढूँढूँगी शृगार-साधन वहॉ पै मै,
होगे जो दुनिया के सार ॥
करूँगी सखि, मै अपना शृगार ॥४॥

जनता का सेवक जला होगा कोई,
लेकर वहाँ की मै छार ।
सिर पै चढाऊँगी, ऑखोमे ऑजूँगी,
पाऊँगी शोभा अपार ।
करूँगी सखि, मै अपना शृगार ॥५॥
गूँथूँगी उस ही चितामे से लेकर के,
हीरे से फूलो का हार ।
उन ही से कङ्कण अँगूठी बनाऊँगी,
लूँगी मै गहने सम्हार ॥
करूँगी सखि, मै अपना शृगार ॥६॥
जिस पथसे लोक-सेवी महायोगी,
होकर हुआ होगा पार ।
उस पथ की धूलि का चूर्ण करके मै,
लूँगी कपोलो पे धार ॥
करूगी सखि, मै अपना शृगार ॥७॥
होगी जो योगीकी कोई वियोगिनी,
ऑसू रही होगी ढार ।
उसही के ऑसूके मोती बनानेको,
लूँगी मै ऑसू उधार ॥
करूँगी सखि, मै अपना शृंगार ॥८॥
ऐसी सजीली रँगीली बनूगी मै,
जाऊँगी सैयाँ के द्वार ॥
उनको रिझाऊगी, अपना बनाऊगी,
दूगी मैं प्रेमोपहार ॥
करूँगी सखि, मैं अपना शृगार ॥९॥

वियोग

कब तक देखूँ बाट बतादो कैसे तुम्हे बुलाऊँ ।
यदि मै आऊँ पास तुम्हारे तो किस पथमे आऊँ ॥
कब तक तुमसे दूर बतादो होगा मुझको रहना ।
निर्बल कधो पर अनन्त कष्टो का बोझा सहना ॥ १ ॥
भरा हुआ यह हृदय तुम्हारे विना बना है सूना ।
जब जब याद तुम्हारी आती होता है दुख दूना ॥
रूखा सूखा अग हुआ है फीका पड़ा बदन है ।
कूडा कर्कट भरा हुआ है गँदला हुआ सदन है ॥ २ ॥
तुम ही हो सौन्दर्य जगत के अबलो के अवलम्बन ।
मन-मन्दिर के देव तुम्ही हो दुखियाके जीवनधन ॥
जीवन-रजनी के शशि तुम हो तुम बिन जीवन फीका ।
तुम बिन काल कटेगा कैसे इस लम्बी रजनीका ॥ ३ ॥
तुम घटके अन्तर्यामी हो ज्ञात तुम्हे सब बाते ।
किस प्रकार दु खो मे कटती है दुखिया की राते ॥
फिर भी मुझको नही बताते कैसे तुमको पाऊँ ।
इस अनन्त दुखमय दोजख को कैसे स्वर्ग बनाऊँ ॥ ४ ॥
दिखती मुझको मूर्ति तुम्हारी है कोने कोने मे ।
फिर भी हाथ न आते क्या फल है छलिया होनेमे ।
सुनते और देखते हो सब फिर मै क्या क्या रोऊँ ।
सिसक सिसककर इन अँसुओसे कबतक आँखे धोऊँ ॥ ५ ॥

देव, तुम्हारे बिना आज सर्वस्व लुटा है मेरा ।
बुद्धि हुई दुर्बुद्धि हृदय मे है अशान्तिका डेरा ॥
धन, तन, बल, उपभोग भोग सब शान्त नहीं करपाते ।
किन्तु बढाते है अशान्ति ये मनका ताप बढाते ॥ ६ ॥
ये सब प्राणवान होगे तब जब मै तुम को पाऊँ ।
बिगडी सभी बनेगी यदि मैं दर्शन भी पाजाऊँ ॥
सब कुछ ल लो किन्तु हृदय के ईश्वर मेरे आओ ।
अथवा बन्धन-मुक्त बनाकर अपना पथ दिखलाओ ॥ ७ ॥

उपहार

जबसे दीपक जला तभीसे होने लगा अग शृङ्गार ।
नव आशाओमे भर करके भूलगई सारा ससार ॥
लगी रही टकटकी द्वार पर ऑखो को न मिला अवकाश ।
प्रियतम तो तब भी न दिखाये मन ही मन होगई निराश ॥
मुरझा गये हाथ के गजरे सूख गया फूलोका हार ।
मैने भी तब तो झुँझलाकर मिटा दिया सारा शृङ्गार ॥
बोली, व्यर्थ बनाया मैने बाहर का बनावटी वेश ।
क्या न हृदयकी सुन्दरतासे रीझेगे प्यारे प्राणेश ॥
जब कि यही गुनगुना रही थी तब प्रियतम आये चुपचाप ।
खडे खडे आतुर नयनो से देखा बिखरा केश-कलाप ॥
हुआ सम्मिलन, हँसकर बोले-"क्या दोगी मुझको उपहार"
दृग से आँसू निकल पडे मैं बोली-लो मोती का हार ॥

प्यालेवाले

[१]

दया कर ए प्यालेवाले,
करके मस्त मुसाफिर लूटा पिला पिला प्याले ।
दया कर ए प्यालेवाले ॥

[२]

निर्दय, यह सहार किया क्यो ।
मुग्ध पथिक को मार दिया क्यो ॥
घूँट घूँट पर घूँट पिलाये मारे ज्यो भाले ।
दया कर ए प्यालेवाले ॥

[३]

मिला तुझे थोडासा भाडा ।
पर उसका ससार बिगाडा ॥
उसे पडेगे अब पद पद पर टुकडोके लाले ।
दया कर ए प्याले वाले ॥

(४)

दुनिया को अपना श्रम देकर ।
जाता था आशाएँ लेकर ॥
घर की आशा मे भूला था पैरो के छाले ।
दया कर ए प्यालेवाले ॥

(५)

तूने उस पर नशा चढा कर ।
बेचारे को दीन बनाकर ॥
उसके सभी इरादे तूने आज तोड डाले ।
दया कर ए प्यालेवाले ॥

[६ [

आखिर है यह कितना जीवन ।
इसके लिये पाप में क्यो मन ।
बन्धु बन्धु है सभी प्रेम से प्रेम-गीत गाले ॥
दया कर ए प्यालेवाले ॥

[७]

इतनी तृष्णा बढी भला क्यो ।
मूर्ख, करने पाप चला क्यो ।
खाना है दो कौर प्रेमसे आकर तू खाले ॥
दया कर ए प्यालेवाले ॥

(८)

छोड छोड यह नशा चढाना ।
मानव का अज्ञान बढाना ।
इतना पाप बोझ करता क्यो जो न टले टाले ।
दया कर ए प्यालेवाले ॥



मनुष्यता

पाई मनुष्यता है कर्तव्य नित्य करना।
जीवन सफल बनाने जग की विपत्ति हरना ॥ १ ॥
आलस्य मत दिखाना,
स्वार्थान्धता भगाना,
सत्प्रेम--पथ जाना,
सर्वत्र प्रेम भरना। पाई ॥ २ ॥
अन्याय हो न पावे,
निर्बल न मार खावे,
अबला न दुख उठावे,
नय पथ में विचरना॥ पाई ॥ ३ ॥
स्वाधीनता जगाना,
यह दासता हटाना,
गर्दन भले कटाना,
आपत्ति से न डरना॥ पाई ॥ ४ ॥
लो फूट से बिदाई,
है सब मनुष्य भाई,
इनमे न है जुदाई,
मनमे न मान धरना ॥ पाई ॥ ५ ॥

मत का घमड छोडो,
यह जाति-भेद तोडो,
मुँह प्रेम से न मोडो,
यदि दु ख-सिन्धु तरना ॥ पाई ॥ ६ ॥

दुर्बुद्धि है सताती,
श्रद्धान्ध है बनाती,
बनना न पक्षपाती,
समभाव प्रेम करना ॥ पाई ॥ ७ ॥

बन कर्मयोग-धारी,
कर्मण्यता-प्रचारी,
ससार-दु खहारी,
रोते हुए न मरना ॥
पाई मनुष्यता है कर्तव्य नित्य करना ॥ ८ ॥

उद्धारकात्मा से

तुम कहते थे हम आवेगे पर भूलगये क्यो अपनी बात ।
क्या विश्वनियम तुमने भी पकडा दीनोपर करते आघात ॥
हम दीन हुए, जग हँसता है, पर तुम क्यो बन बैठे नादान ?
या किसी तरह से रिसागये हो मनमे रक्खा है अभिमान ॥
अथवा पिछले पापोंका अबतक हुआ नही पूरा परिशोध ।
या किया हमारी वर्तमान करतूतोने ही पथका रोध ।
तुम जिस बन्धन मे पडे हुए हो तोडो उस बन्धनका जाल ।
मत ढील करो, क्या नहीं जानते हम दीनोंके हाल हवाल ॥

मतवारे

समझजा स्वार्थी मतवारे ।
पाकर बुद्धि अन्ध-श्रद्धा से मरता क्यों प्यारे ॥
समझजा स्वार्थी मतवारे ॥ १ ॥

अहंकार का लगा दवानल तू है और लगाता ।
क्यों ईंधन देता है भूले को है और भुलाता ॥
फिराता क्यों मारे मारे ।
समझजा स्वार्थी मतवारे ॥ २ ॥

छाई है नव-घटा मोर नचते हैं वनके अंदर ।
प्लावित होंगी तपे तवासी भूमि और गिरि कन्दर ॥
मिलेंगे सब न्यारे न्यारे ।
समझजा स्वार्थी मतवारे । ॥ ३ ॥

झरता है आकाश बता तू कहां 'थेगरा' देगा ।
रसकी बूँदे टपक रही हैं कह तू क्या कर लेगा ॥
पियेंगे प्यासे दुखियारे ।
समझजा स्वार्थी मतवारे ॥ ४ ॥

ज्वालाएँ बुझती जाती हैं देख जलानेवाले ।
अब रसमय संसार बना है भरे नदी नद नाले ॥
फोड़ता क्यों रोकर तारे ।
समझजा स्वार्थी मतवारे ॥ ५ ॥

मिहर्बां

(१)

मिहर्बां हो जायेंगे, दर्दे जिगर होने तो दो ।
संगदिल गल जायेंगे, कुछ रुख इधर होने तो दो ॥

(२)

दिल गलाकर जो बनाऊँ, आँसुओंकी धार मैं ।
दिलमे चमकेंगे मगर यह दिल जरा धोने तो दो ॥

(३)

पुतलियोंमे ही पकड कर कैद कर दूँगा उन्हे ।
पर पुतलियो को जरा बेचैन बन रोने तो दो ॥

(४)

वे उठायेंगे मुझे, छाती लगायेंगे मुझे ।
ख्वाब उनका देखने को कुछ मुझे सोने तो दो ॥

(५)

नेक बनकर जब मुहब्बत जर्रे जर्रे से करूँ ।
वे मुहब्बत मे फँसेगे पर बदी खोने तो दो ॥

(६)

आयेंगे कर जायेंगे वे दिलको मोअत्तर चमन ।
पर दिलोपर प्रेम के कुछ बीज भी बोने तो दो ॥



युवक

ओ युवक वीर ओ युवक वीर ।
किस लिये आज तू है अधीर ॥
ओ युवक वीर ओ युवक वीर ।
पथ है न अगर तो पथ निकाल ।
हो गिरि अटवी या भीष्म व्याल ॥
बढता चल चलकर पवन चाल ।
बढ तू बाधाएँ चीर चीर ।
ओ युवक वीर ओ युवक वीर ॥ १ ॥
बट वीर प्रलोभन--जाल तोड ।
विपदाओ की चट्टान फोड ॥
कायरता की गर्दन मरोड ।
हरले दुनिया की दुःख पीर ।
ओ युवक वीर, ओ युवक वीर ॥ २ ॥
रख साहस क्यो बनता अनाथ ।
यौवन से है जब तू सनाथ ॥
भगवान सत्य दे रहा साथ ।
उडता चल बनकर खर समीर ।
ओ युवक वीर ओ युवक वीर ॥ ३ ॥
कर जाति पाँति जजाल दूर ।
सारे घमड कर चूर चूर ॥
सर्वस्व त्याग बन प्रेम-पूर ।
दुनिया की खातिर बन फकीर ।
ओ युवक वीर ओ युवक वीर ॥ ४ ॥

सम्मेलन

हुआ बिछुडो का सम्मेलन,
भाई भाई दूर हुए थे टूट चुके थे मन।
हुआ बिछुडो का सम्मेलन ॥ १ ॥
एक जाति पर भेद बनाये।
एक धर्म नाना कहलाये ॥
एक पथके विविध पन्थकर भटके हम वन वन ॥
हुआ बिछुडो का सम्मेलन ॥ २ ॥
सत्य अहिंसा ध्येय हमारा।
विश्वप्रेम ही गेय हमारा।
भूले ध्येय गेय लड बैठे कैसा भोलापन ॥
हुआ बिछुडो का सम्मेलन ॥ ३ ॥
राम कृष्ण जिनवीर मुहम्मद।
बुद्ध यीशु जरथुस्त प्रेमनद।
न्यारे न्यारे वेष किन्तु हितमय सबका जीवन ॥
हुआ बिछुडो का सम्मेलन ॥ ४ ॥
आज हृदय से हृदय मिला है।
मुरझाया मन सुमन खिला है।
समुदित सत्यसमाज आज भर देगा नवचेतन ॥
धन्य यह सच्चा सम्मेलन ॥ ५ ॥



मेरी भूल

हुई थी कैसी, मेरी भूल ।
तेरी महिमा भूल व्यर्थ ही डाली तुझ पर धूल ।
हुई थी कैसी मेरी भूल ॥

[१]

थोडी सी यह मति गति पाकर ।
सद्विवेक का भान भुलाकर ।
मान-यान मे बैठ उडगे ली मन ही मन फूल ।
हुई थी कैसी मेरी भूल ॥

[२]

थोडासा धनका लव पाकर ।
अपने को उन्मत्त बना कर ।
मानवता पर तिरस्कार बरसा कर बोये शूल ।
हुई थी कैसी मेरी भूल ॥

[३]

थोडासा अधिकार मिला जब ।
गर्ज उठा निर्दय होकर तब ।
पाया जग से कोटि कोटि धिक्कार बना प्रतिकूल ।
हुई थी कैसी मेरी भूल ॥

[४]

थोडासा यदि नाम कमाया ।
पाई यश की झूठी छाया ।
छाया की माया में भूला, उडा, उडे ज्यो तूल ।
हुई थी कैसी मेरी भूल ॥

[५]

महाकालने चक्र घुमाया ।
तब ऊपर से नीचे आया ।
नदन वन की जगह खडे देखे चहुँ ओर बबूल ।
हुई थी कैसी मेरी भूल ॥

[६]

तेरी याद हुई मुझको तब ।
काल लूट ले गया मुझे जब ।
की जड चेतन जगने मेरे दुख मे टालमटूल ।
हुई थी कैसी मेरी भूल ।

[७]

तब तेरी चरण-स्मृति आई ।
मैने अश्रुधार बरसाई ।
आखो का मल बहा दिखा सच्चे जीवन का मूल ।
हुई थी कैसी मेरी भूल ॥

[८]

दूर हुआ तेरा बिछोह तब ।
मद उतरा हट गया मोह तब ।
विश्वप्रेमके रग रँगा मै पाकर तेरी धूल ।
तभी सुधरी वह मेरी भूल ।



तू

मिला तू जीवन का आधार ।
दुनिया के धक्के खा खाकर आया तेरे द्वार ॥ मिला ॥
परम निरीश्वर का ईश्वर तू वीतराग का राग ।
बुद्धि भावना का संगम तू तू है अजड प्रयाग ॥
विश्वके सब तीर्थों का सार ।
मिला तू जीवन का आधार ॥१॥
मुझ निर्बल का बल है तू ही मुझ मूरख का ज्ञान ।
मुझ निर्धन का धन है तू ही तू मेरा भगवान ॥
भक्ति है तू ही तू ही प्यार ।
मिला तू जीवन का आधार ॥२॥
निर्मल बुद्धि बताई तूने निर्मल व्योम समान ।
मात अहिंसा की सेवा मे खींचा मेरा ध्यान ॥
बजाये मेरे टूटे तार ।
मिला तू जीवन का आधार ॥३॥
तेरे चरण पालिये मैने अब किसकी पर्वाह ।
विपत्प्रलोभन कर न सकेंगे अब मुझको गुमराह ॥
चलूगा तेरे चरण निहार ।
मिला तू जीवन का आधार ॥४॥
निर्बल निर्धन निःसहाय हू बुद्धिहीन गुणहीन ।
सभी तरह से बना हुआ हू मै दीनों का दीन ॥
किन्तु है तेरी भक्ति अपार ।
करेगी जो मेरा उद्धार ॥५॥

तेरा नाम धाम

गिनाऊँ क्या क्या तेरे नाम ।
कहूँ क्या कहा कहा है धाम ॥
नित्य निरंजन निराकार तू प्रभु ईश्वर अल्लाह ।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर तू ही, परम प्रेम की राह ॥
खुदा है तू ही तू ही राम ।
गिनाऊँ क्या क्या तेरे नाम ॥१॥
महादेव शिव शंकर जिन तू रब रहीम रहमान ।
गोड यहोवा परम पिता तू अहुरमज्द भगवान ॥
सिद्ध अरहंत बुद्ध निष्काम ।
गिनाऊँ क्या क्या तेरे नाम ॥२॥
सेतुबंध जेरुसलम काशी मक्का या गिरनार ।
सारनाथ सम्मेदशिखर में बहती तेरी धार ॥
सिन्धु गिरि नगर नदी वन ग्राम ।
कहूँ क्या कहा कहा है धाम ॥३॥
मन्दिर मसजिद चर्च, गुरु-द्वारा स्थानक सब एक ।
सब धर्मालय सब में तू है होकर एक अनेक ॥
सभी को वन्दन नमन सलाम ।
कहूँ क्या कहा कहा है धाम ॥४॥
मन्दिर में पूजा को बैठा मसजिद पढ़ी नमाज ।
गिरजा की प्रेयर में देखा मैंने तेरा साज ।
एक हो गये सलाम प्रणाम ।
गिनाऊँ क्या क्या तेरे नाम ॥५॥

तेरा रूप

तेरा रूप न जाना मैंने ।
निराकार बनकर तू आया मगर नहीं पहिचाना मैंने । तेरा ॥१॥
मन मन मे था तन तन मे था ।
कण कण मे था क्षण क्षण मे था ॥
पर मै तुझको देख न पाया, पाया नहीं ठिकाना मैंने । तेरा ॥२॥
रवि शशि भूतल अनल अनिल जल ।
देख चुका तेरा मूरति--दल ।
मूरति देखी किन्तु न देखा, तेरा वहा समाना मैंने । तेरा ॥३॥
उरग नभश्चर जलचर थलचर ।
तेरी मूर्ति बने सब घर घर ।
उन सबने संगीत सुनाया, तेरा सुना न गाना मैंने । तेरा ॥४॥
पर जब तू मानव बन आया ।
तब तेरे दर्शन कर पाया ॥
तब ही परम पिता सब देखा, तेरा पूजन ठाना मैंने । तेरा ॥५॥
करुणा प्रेम ज्ञान बल संयम ।
वत्सलता दृढता विवेक शम ॥
देखे तेरे कितने ही गुण, तब तुझको पहिचाना मैंने । तेरा ॥६॥
तुझको परम पिता सम पाया ।
देखी सिर पर तेरी छाया ॥
तब ही पुलकित होकर ठाना, जीवन सफल बनाना मैंने ॥
तेरा रूप न जाना मैंने ॥७॥

भगवति

कल्याणकारिणि दुखनिवारिणि प्रेमरूपिणि प्राणदे ।
वात्सल्यमयि सुखदे क्षेमे जगदम्ब करुणे त्राणदे ॥
भगवति अहिंसे आ यहाँ भूले जगत पर कर दया ।
वीरत्व मे भी प्यार भरकर विश्वको करदे नया ॥१॥

सारे नियम यम अंग तेरे वस्त्र तेरे धर्म है ।
ये वस्त्र के सब रंग दैशिक और कालिक कर्म हैं ॥
गुणगण सकल भूषण बने चैतन्यमयि हे भगवती ।
हे शक्तिप्रेममयी अभयदे अमर ज्योति महासती ॥२॥

इंजील हो या हो पिटक या सूत्र वेद पुरान हो ।
हो ग्रंथ अवस्ता व्यवस्था-शास्त्र या कि कुरान हो ॥
सब है सरस संगीत तेरे दूर करते है व्यथा ।
सब धर्मशास्त्रो मे भरी है एक तेरी ही कथा ॥३॥

वे हो मुहम्मद यीशु हो या बुद्ध हों या वीर हो ।
जरथुस्त हो कन्फ्यूसियस हो कृष्ण हो रघुवीर हो ॥
अगणित दुलारे पुत्र तेरे विश्व के सेवक सभी ।
तेरे पुजारी वे सभी समता न जो छोडे कभी ॥४॥

मातेश्वरी ऐश्वर्य अपना विश्व मे विस्तार दे ।
हो प्रेम-परिपूरित जगत ऐसा जगत को प्यार दे ॥
धुल जाय सारा वैर जिसमे वह सुधा की धार दे ।
सत्प्रेम का शृङ्गार दे यह वरद पाणि पसार दे ॥५॥

जगदम्ब

जगदम्ब जगत है निरालम्ब अवलम्बन देने को आजा ।
हिंसा से जगत तबाह हुआ जगको सुख देने को आजा ॥
रहने दे निर्गुण रूप प्रेम की मूरति माँ बनकर आजा ।
रोते बच्चे खिलखिला उठें ऐसा प्रसन्न मन कर आजा ॥१॥

भर रहा जगत में द्वेषदम्भ सब जगह क्रूरता छाई है ।
छल छद्मोंने मन भ्रष्ट किये इसलिये गंदगी आई है ॥
है तड़प रहे तेरे बच्चे दुःखों से पिंड छुड़ा दे तू ।
भनभना रही है विपदाएँ अञ्चल से तनिक उड़ादे तू ॥२॥

बरसादे मन पर प्रेम सुधा नन्दन सा उपवन बन जावे ।
सब रंग विरंगे फूल खिलें स्वर्गीय दृश्य भूपर आवे ॥
सब रंगों का आकृतियों का जगमें परिपूर्ण समन्वय हो ।
हैवान भगें शैतान भगे सबका मन मानवतामय हो ॥३॥

तेरी गोदी का सिंहासन मिल जावे सबको मनभाया ।
सन्तप्त जगत पर छाजाये तेरे ही अञ्चल की छाया ।
वात्सल्यमयी मूरति तेरी दुनिया की आशा हो बल हो ।
सारा धन वैभव चञ्चल हो पर तेरी मूर्त्ति अचंचल हो ॥ ४ ॥

तेरा अनहद संगीत उठे ब्रह्मांड चराचर छाजावे ।
उस तान तान पर सारा जग सर्वस्व छोड़ नचता आवे ।
धन वैभव बल अधिकार कला तेरा अपमान न कर पावे ।
श्री शक्ति शारदाओं का दल सबमें राग मिलाजावे ॥५॥

जय सत्य अहिंसे

जय सत्य अहिंसे जगत्पिता जगमाता ।
कल्याणधाम अभिराम सकलसुखदाता ॥
तुम चिदाकार निर्मूर्त्ति अनवतारी हो ।
पर भक्त-हृदय मे गुणमय नर-नारी हो ।
तुम जननी-जनक-समान प्रेम-धारी हो ॥
भगवान-भगवती हो अघ-तमहारी हो ॥
तुममे वात्सल्य विवेक मूर्त्त बनजाता ।
जय सत्य अहिंसे जगत्पिता जगमाता ॥१॥

निर्मल मति का सन्देश सुनाया तुमने ।
सयम सुख का साम्राज्य दिखाया तुमने ॥
वीरत्वपूर्ण समता को गाया तुमने ।
भाई भाई मे प्रेम सिखाया तुमने ॥
है वरद पाणि भक्तो को अभय बनाता ।
जय सत्य अहिंसे जगत्पिता जगमाता ॥ २ ॥

तुम हो अवर्ण पर नाना वर्ण तुम्हारे ।
तुम रजतचन्द्रिका-सम जगके उजयारे ॥
है दिव्य ज्ञानकी ज्योति नयन रतनारे ।
तपनीय वर्ण गुणमय भूषण है प्यारे ॥
है अग अग वैभव अवल सरसाता ।
जय सत्य अहिंसे जगत्पिता जगमाता ॥ ३ ॥

है देश काल का तुमने मर्म बताया ।
है पट के नाना रंग ढंग ऋतु-छाया ॥
इस विविध-रूपता में एकत्व दिखाया ।
सब धर्मोंमे भर रही तुम्हारी माया ॥
तुम सब धर्मों के मूल, जगत के त्राता ।
जय सत्य अहिंसे जगत्पिता जगमाता ॥ ४ ॥

जितने तीर्थंकर धर्म सिखाने आये ।
जितने पैगम्बर ईश्वर-दूत कहाये ॥
जितने अवतारों ने सुकर्म बतलाये ।
उन सबने गुणगण सदा तुम्हारे गाये ॥
तुम मातपिता, वे हैं सुपुत्र, सब भ्राता ।
जय सत्य अहिंसे जगत्पिता जगमाता ॥ ५ ॥

सारे संयम सज्ज्ञान, स्वरूप तुम्हारे ।
अम्बर के तन्तु समान नियम यम सारे ॥
सब सम्प्रदाय, पटके एकेक किनारे ।
तुम नभसमान, गुणगण है रविशशि तारे ॥
तुम हो अनंत कोई न अंत है पाता ।
जय सत्य अहिंसे जगत्पिता जगमाता ॥ ६ ॥

बच्चों पर अपनी दयादृष्टि फैलाओ ।
दो घट घट के पट खोल प्रकाश दिखाओ ॥
अन्तस्तल का मल दूर कराओ आओ ।
भूली दुनिया पर वरद पाणि फैलाओ ॥
हो विश्वप्रेम, सदसद्विवेक, सुखसाता ।
जय सत्य अहिंसे जगत्पिता जगमाता ॥ ७ ॥